अगस्त (द्वितीय) 2021 | ₹ 35.00

चंपक

J

VISIT…

LANZAROTE

Caliente.COM

DELHI PRESS

HAPPIER
CHILDHOODS
GUARANTEED

If you are looking for magazines that will help spark the imagination of your child, look no further! Dedicated to broadening the horizons of children aged 2-12 years, *Champak*, *Highlights Genies* and *Highlights Champs* are an essential part of your child's reading list.

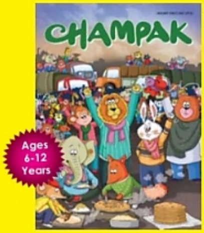
CHAMPAK
Ages 6-12 Years

India's largest read children's magazine

Highlights CHAMPS
What is FAIRY BREAD?
Slo-Mo SLOTH
Create your SILLY HERO
Ages 6-12 Years
America's leading children's magazine is now in India!

America's leading children's magazine is now in India!

Highlights Genies
Ages 2-6
Find this hidden spoon!
Sloth Party Guide
Ages 2-6 Years
America's leading early-childhood magazine is now in India!

America's leading early childhood magazine is now in India!

To subscribe : SMS 8588843436 | Call toll free no.1800 103 8880 | visit www.delhipress.in/subscribe | email subscription@delhipress.in

चंपक

अगस्त (द्वितीय) 2021 अंक : 1219

सुनो कहानी

हसन फिर पढ़ने जाने लगा 4
अनोखा रक्षाबंधन 15
यादगार ट्रिप 21
जनता की आवाज 28
जिहान, अयान और मच्छर 38
मिंकी की पायल 46

मुखपृष्ठ

74 साल पहले भारत एक स्वतंत्र देश था. हम ने अपना तिरंगा फहराया था और स्वतंत्रता का स्वागत किया था. लेकिन हमारे लिए स्वतंत्रता क्या है?
writetochampak@delhipress.in पर आप अपने विचारों को हम से साझा करें.

संस्थापक
विश्वनाथ
1917–2002

मन बहलाओ

सुंदर रंग भरो 10
इन में सामान्य क्या है 11
देखो हंस न देना 12
रास्ता बताओ 14
बताओ तो जानें 20
बिंदु मिलाओ 26
हमारे राष्ट्र निर्माता 27
चित्र पूरा करें 34
स्मार्ट 36
अंतर बताओ 44
गलत को बताएं 45

चित्र कथाएं

डमरू और राखियां 13
चीकू 24
दादाजी और रक्षाबंधन 42

विशेष पृष्ठ

मजेदार विज्ञान 19
मेनका आंटी के जवाब 35

संपादक व प्रकाशक ● परेश नाथ

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 41398888, 23529557-62.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा -121003 से मुद्रित. संपादक - परेश नाथ.

Sold on the condition that jurisdiction for all disputes concerning sale, subscription and published matter will be in courts/forums/tribunals at Delhi.

चंपक में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और किसी से उन की समानता संयोग मात्र है.
प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा भेजना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. प्रेषित रचनाओं की सुरक्षा/वापसी के लिए कार्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं है.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.

'चीकू' शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है. वार्षिक मूल्य केवल क्रेडिट कार्ड/चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'चंपक' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. एक प्रति रु. 30.00 (बिना सोडी के),
वार्षिक रु. 576, दो वर्ष रु. 1050. (भारत में)

ग्राहक बनने और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी संपर्क करें :
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
ई–8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली–110055
फोन: 91–11–41398888, एक्स. नं. 119, 221, 264.
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप: 08588843408
ईमेल: subscription @ delhipress.in

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
बी–3, वडाला उद्योग भवन, नैगांव क्रौस रोड, वडाला मुंबई–400031. फोन : 91–22–24122661, 43473050.

- रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल: article.hindi @ delhipress.in
- निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ईमेल: invites.pressrelease @ delhipress.biz
- संपादक को पत्रों के लिए ईमेल: editor @ delhipress. biz
- ग्राहक विभाग के लिए ईमेल: subscription @ delhipress.in

अपनी कहानी, कविता, ड्राइंग्स तथा क्राफ्ट्स यहां भी भेज सकते हैं :
writetochampak@delhipress.in या एसएमएस करें : 09619587613
www. facebook.com/ChampakMagazine और https://www.youtube.com/ user/ ChampakSciQ

हसन फिर पढ़ने जाने लगा

कहानी ● लक्ष्मी गोपीनाथन

‘‘हसन...’’ अम्मी की आवाज हवा में लयबद्ध तरीके से गूंजती चली गई, हसन ने अपनी किताब से सिर ऊपर उठाया तो आकाश में सूरज उस का स्वागत कर रहा था.

‘‘आया, अम्मी,’’ हसन खड़ा हुआ और उस ने अपने पाजामे की धूल झाड़ी. किताब उस ने बाजू के नीचे रखी थी. हसन गंभीर स्वभाव का लड़का था, एक ऐसा लड़का जो समय से पहले ही बड़ा हो गया था. उसे स्कूल में प्लेग्राउंड पर इधरउधर भागना और अपने दोस्तों के साथ खेलना याद था जैसे यह कल की ही बात हो.

आज स्वतंत्रता दिवस है और जहां तक हसन को याद है, यह उत्सव खेल और मिठाइयां खाने का दिन हुआ करता था, लेकिन अब वह सब बीती याद की तरह महसूस हो रहा था. अब वह केवल सशस्त्र बलों के पैदल और गश्ती जीप के चलने की आवाज के बारे में ही सोच सकता था जिस ने उसे एक स्वनिर्मित जेल में भेज दिया था. वे आवाजें उसे डराती थी और उस ने महसूस किया था कि उस के जीवन में भारी बदलाव के ये सभी मुख्य कारण थे.

‘‘तुम क्या कर रहे हो, बेटे?’’ जब हसन पास आया तो अम्मी ने प्यार से पूछा.

‘‘मैं इस किताब को 10वीं बार पढ़ रहा हूं, अम्मी,’’ हसन ने जवाब दिया और एक मुसकान के साथ अपनी मां के सवालों का जवाब देने से कभी थकान महसूस नहीं की.

अब्बा मार्केट से छोटेमोटे काम कर के घर आ गए थे. जैसे ही वे अम्मी के बगल में बैठे उस का चेहरा उत्साह से चमक उठा.

हसन ने पिछले एक साल में कई बार अपने अम्मीअब्बा को श्रीनगर से जाने की चर्चा करते सुना था, लेकिन उसे यकीन नहीं था कि ऐसा कभी होगा. दो साल से भी अधिक समय से हसन ऐसा जीवन बिता रहा था, जिस के बारे में उस ने कभी सोचा भी नहीं था. शुरुआत में वह कभीकभार घर से बाहर निकल जाता और अपने दोस्तों से मिल लिया करता था, लेकिन कोविड-19 ने उसे भी रोक दिया था. कभीकभी सामुदायिक रेडियो और खराब इंटरनैट पर औनलाइन कक्षाएं जब अम्मी और अब्बा बारीबारी से होमस्कूलिंग करते थे, तब यह रूटीन हुआ करता था. उस का सब से करीबी दोस्त आमिर अपने अम्मीअब्बा के साथ गांव चला गया था, ऐसा लग रहा था कि अब जाने की उन की बारी है.

‘‘हसन, हम तुम से यहां से जाने के बारे में बात करना चाहते हैं,’’ अब्बा की आवाज ने हसन की तंद्रा भंग कर दी.

‘‘हां, अब्बा,’’ हसन कर्तव्यनिष्ठा के साथ अपने अब्बा के पास बैठ गया.

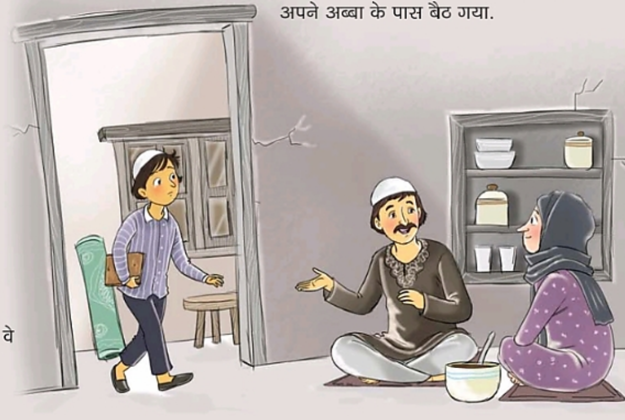

“तुम जानते हो न, हमारे लिए यह कितना कठिन समय रहा है, हम डावर की ओर बढ़ रहे हैं.”

हसन का चेहरा खिल उठा और उसे अब्बा का गांव याद आ गया, हालांकि वे कुछ समय से वहां नहीं रह रहे थे. लेकिन उसे कुछ याद था तो सिर्फ इतना ही, बहती हुई नदी, एक प्राचीन घाटी और सुंदर ऊंचेऊंचे पहाड़.

“डावर अब कितनी दूर है, अब्बा?”

“वह ज्यादा दूर नहीं है, बेटा, यहां से 100 किलोमीटर के करीब होगा.”

“हम वहां कैसे पहुंचेंगे, अब्बा? हम कहां रहेंगे? क्या मैं वहां स्कूल जा सकूंगा? क्या आप और अम्मी वहां नौकरी करेंगे?” हसन के सवालों ने अब्बा को बेचैन कर दिया.

“हां, हसन, वहां जीवन अलग होगा. आशा से भरा होगा,” अम्मी ने हसन के माथे पर एक चुंबन जड़ दिया और उसे अपने आलिंगन में ले लिया. हसन अम्मी की बाहों में फिसलता चला गया. वह मुसकराया और उन का चेहरे देखने लगा.

“क्या मैं वहां स्कूल जा पाऊंगा, अम्मी?” अम्मी और अब्बा एकदूसरे को देखने लगे.

“हसन, हम तुम्हारे लिए पढ़ने और सीखने का एक तरीका खोज लेंगे. हम वादा करते हैं.”

“हम कैसे जाएंगे, अब्बा?”

“हम श्रीनगर से अगले सोमवार को गुरेज घाटी के लिए सुमो पकड़ेंगे.”

हसन ने अपना सिर हिलाया. उस का मनमस्तिष्क उज्ज्वल कल के सपनों से भर गया था.

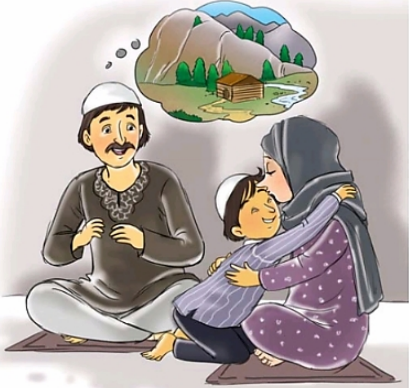

एक सप्ताह बीत गया और हसन सामान पैक करने और अपने दोस्तों तथा पड़ोसियों को अलविदा कहने में व्यस्त था. सभी ने मास्क लगाए हुए थे. वे एकदूसरे के गले नहीं लगे, लेकिन प्यार भरे दिलों से सभी ने अलविदा कहा. अम्मी और हसन ने उन के सभी दोस्तों को बांधने के लिए राखियां बनाईं, जो श्रीनगर में जीवन भर भाईबहनों की तरह रहे. इस वर्ष रक्षाबंधन भी अलग किस्म का होगा, लेकिन परंपरा को जिंदा रखा जाएगा.

“तुम अपनी सहेलियों को राखी क्यों बांधती हो, अम्मी?”

“क्योंकि उन्होंने मेरी मदद की, मेरे साथखड़ी रहीं और वर्षों हमारी रक्षा करते रही, खास कर कठिन परिस्थितियों में, ठीक उसी तरीके से जैसे सगे भाईबहन करते हैं.”

इस से पहले कि वे इसे जान पाते, यह डावर की यात्रा का दिन था. यात्रा से पहले शाम को अम्मी ने हसन का पसंदीदा मोदुर पुलाव पकाने का फैसला किया. अम्मी ने चावल अच्छी तरह पकाए थे, न ही बहुत कम और न ही ज्यादा उबले हुए थे. हसन ने निर्देशानुसार केसर को पानी में भिगो दिया.

“क्या तुम किसी को राखी बांधना चाहोगे हसन?” पैन में घी गरम करते हुए उस में लौंग, तेजपत्ता, एक दालचीनी पत्ता, इलायची और कालीमिर्च डालते हुए अम्मी ने हसन से पूछा.

हसन अपना ऊपरी होंठ चबाते हुए भौंहें चढ़ा कर

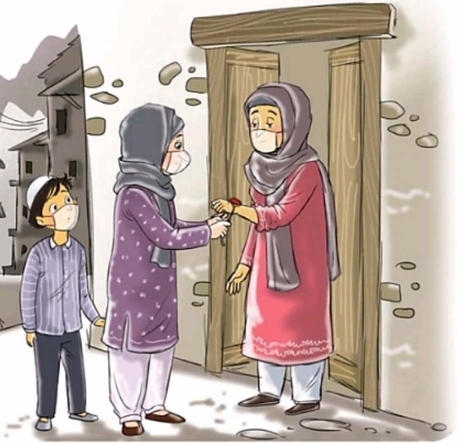

बोला, ''मुझे नहीं पता, अम्मी. मेरे सभी दोस्त चले गए हैं.''

''तो ठीक है, तुम गांव में अपने नए दोस्त और कई सार्थक रिश्ते बना लेना. अम्मी के पैकेट से एक राखी ले लो और जिस को दोस्त बनाओगे, उसे बांध देना,'' अम्मी ने बरतन में चीनी मिलाई और गाढ़ा शोरबा बनाते हुए कहा.

हसन अम्मी के कमरे की ओर भागता हुआ गया और उस ने एक राखी निकाली और उसे सुरक्षित मोड़ते हुए छोटे बैग की पौकेट में रख दिया.

अम्मी ने पके हुए चावल बरतन में डाले और उस के ऊपर खजूर, किशमिश, बादाम और काजू डाले. हसन ने इस के ऊपर केसर का पानी भी डाल दिया. उस का पसंदीदा खाना अब तैयार हो गया था. रसोई में भोजन की खुशबू आ रही थी, हवा में मसालों की सुगंध फैल रही थी.

अगले दिन सुबह हसन सुमो में चढ़ गया. उस ने अपने हृदय में भय महसूस किया. अब्बा ने उसे सुबह बताया था कि भारी हिमपात के कारण सर्दियों में महीनों तक डावर मुख्य टाउन से अलगथलग हो जाता था. इसी वजह से उन्हें अब तक अपने आगे बढ़ने का इंतजार करना पड़ा था. हसन हाथ में नीबू लिए मोशन सिकनेस से निबटने के लिए मुरझाए चेहरे के साथ अम्मी के पास बैठ गया.

हसन एक छोटी सी यात्रा की उम्मीद कर रहा था. उसे नहीं पता था कि टेढ़ीमेढ़ी, घुमावदार और उबड़खाबड़ सड़कें उस का इंतजार कर रही हैं. यात्रा के दौरान उन की सिर गाड़ी की छत से कई बार टकराए. उन्होंने सेना की कई चेकपोस्टों को पार किया. बहुत जल्द बूंदाबांदी शुरू हो गई और सड़कें कुछ ही समय में कीचड़ से सन गईं. जैसे ही सुमो कीचड़ को पार करने लगी, बारिश से गाड़ी की छत जोर से बजनी शुरू हो गई.

अचानक एक भारीभरकम पेड़ के गिरने की जोरदार कड़कड़ाहट के कारण रास्ते में सुमो को रोक दिया गया. पेड़ की एक बड़ी शाखा उन के रास्ते में आ कर गिरी जिस कारण चारपहिया वाहन संकरी सड़क को पार नहीं कर सकते थे. वहां अंधेरा और निराशा थी. मौसम के बारे में कुछ भी आशावादी बात नहीं थी. यह पूछने और समझने के लिए कि क्या किया जा सकता है. यात्री सुमो से बाहर निकल आए. हसन अम्मी के बिलकुल पास बैठ गया और उस ने दुपट्टे को कस कर पकड़ लिया.

एक ट्रक की आवाज ने उसे विचारों से बाहर निकाला. उस ने यह जानने के लिए कि क्या बात है, बाहर झांका, तो सेना का एक ट्रक उन की सुमो के पीछे आ रहा था. एक सैनिक कूद कर बाहर आया और उन की ओर दौड़ा.

हसन डर गया था. सारे डरावने विचार उस के मन में वापस आने लगे थे. क्या वे मुसीबत में थे? क्या उन को नुकसान पहुंचेगा? हसन ने देखा, उस की आंखों में आंसू आ गए थे. उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था.

इस से पहले कि वे कुछ समझ पाते, आधा दर्जन सैनिक ट्रक से बाहर निकले और गिरे हुए

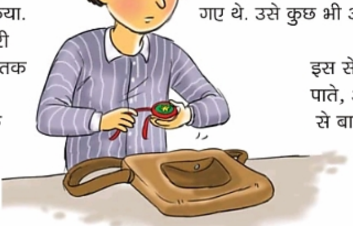

पेड़ के तने को रास्ते से हटाने में मदद करने लगे.

खिड़की से बाहर एक सैनिक का चेहरा दिखाई दिया जो उन से कह रहा था कि गाड़ी का शीशा नीचे कर लो.

''क्या तुम सभी ठीक हो?'' एक दयालु आवाज ने उन से पूछा.

अम्मी ने अपना सिर हिलाया और मुसकरा दीं क्योंकि हसन ने उन की ओर बिना किसी जवाब और डर से देखा .

''तुम्हें क्या हुआ, बेटा?''

हसन को लगा जैसे किसी ने उस की भावनाओं का बांध तोड़ दिया हो, वह फूटफट कर रोने लगा.

सैनिक ने दरवाजा खोला और हसन के शांत होने का इंतजार करने लगा.

''तुम्हारा नाम क्या है?''

''हसन.''

''तुम क्यों रो रहे हो, हसन? क्या यह पेड़ गिर गया, इसलिए रो रहे हो?''

हसन ने ना में सिर हिलाया.

सैनिक उत्सुक दिख रहा था. उस ने पूछा, ''फिर गलत क्या है?''

''हरेक चीज.''

सैनिक मुसकराया, उस ने अम्मी से अनुमति ली और फिर हसन को सुमो से बाहर ले गया. बारिश अब कुछ कम हो गई थी. यात्री और सैनिक अभी भी पेड़ के तने को हटाने में लगे हुए थे.

''तो, हसन, तुम कहां जा रहे हो?''

''डावर, सर.''

''डावर, वह तो एक खूबसूरत गांव है.''

''क्या आप वहां गए हैं, सर?'' हसन ने उत्सुक हो कर उस की तरफ देखा.

''हां, मैं कई बार वहां गया हूं. वह लाइन औफ कंट्रोल के निकट है. क्या तुम जानते हो कि लाइन औफ कंट्रोल क्या है?''

हसन ने सिर हिलाया. वह जानता था कि लाइन औफ कंट्रोल यानी एलओसी जम्मूकश्मीर में भारत और पाकिस्तान की सीमाओं को विभाजित करती है.

''क्या तुम डावर के बारे में और कुछ जानना चाहोगे?''

हसन ने सिर हिलाया. वह सिसक रहा था. वह सोचने लगा कि सैनिक इतने दयालु और संवेदनशील होते हैं? क्या उस की धारणाएं गलत थीं?''

शानदार किशनगंगा नदी पहाड़ों से घिरे गांव से हो कर बहती है. बर्फबारी की वजह से गांव पूरी दुनिया

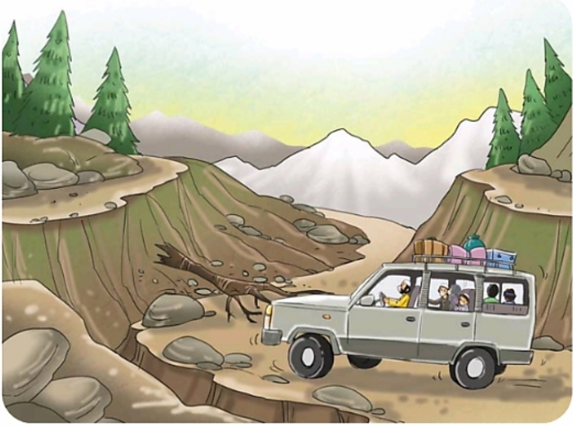

से सालछह महीने के लिए कट सा जाता है. उस दौरान पहाड़ बर्फ से ढक जाते हैं. गर्मियों में वे हरियाली से भर जाते हैं यानी चारों ओर हरेभरे पेड़ वगैरह दिखाई देते हैं. मकान लकड़ी और पत्थर के बने होते हैं और वहां रहने वाले लोग दयालु स्वभाव के और प्यार करने वाले होते हैं.''

''वहां के लोगों का व्यवसाय क्या है, सर?'' हसन ने उत्सुकता से पूछा.

''वे खेत जोतते हैं यानी कृषि का काम करते हैं और अपना भोजन यानी फसल उगाते हैं. वे एक घनिष्ठ समुदाय के लोग हैं. हर कोई एकदूसरे की मदद करता है, चाहे कड़ाके की ठंड ही क्यों न हो. साथ ही पूरे साल किसी भी तरह की परेशानी में सेना हर वक्त उन के साथ रहती है, उन की मदद करती है.''

''आप कहां जा रहे हैं, सर? क्या आप भी डावर आ रहे हैं?''

सैनिक मुसकराया, ''नहीं, हसन. हम चकवाली से ठीक पहले, अंतिम गांव बरनई की ओर जा रहे हैं, जहां सीमा रेखा भारत और पाकिस्तान को विभाजित करती है. वास्तव में आप डावर में पहाड़ों को देख सकते हो, जो पाकिस्तान में खड़े हैं, इन्हें आप भारत की तरफ से देखते हो.''

सड़क पर गिरे पेड़ को हटाया जा चुका था और सब लोग सुमो में सवार हो गए थे. सैनिक ने हसन के साथ जाने और उसे डावर की कहानियां सुनाने का फैसला किया, क्योंकि वे गांव जा रहे थे. उस ने अपनी पोस्टिंग के किस्सों को सुना कर इस यात्रा को सुगम बना दिया और सुमो में बैठे सभी यात्री हंसी में सराबोर थे.

जैसे ही वे गांव पहुंचे, सैनिक ने हसन का हाथ अपने हाथ में लिया और उस की आंखों में देखने के लिए झुक गया.

''हसन, मैं जानता हूं कि ये दिन काफी कठिन हैं. खास कर तुम्हारे जैसे छोटे बच्चों के लिए,'' सैनिक इस छोटे से बच्चे के साथ बातचीत में अपनी भावनाओं को आड़े नहीं आने दे रहा था.

अपनी आंखों से आंसू को पोंछ कर वह हसन की ओर मुड़ा और बोला, ''तुम्हारे जितना ही मेरा भी कोई था, जो प्रश्नों की झड़ी लगाता था, उस की आंखें तारों की तरह टिमटिमाती थीं.''

''वह आदमी अब कहां है, सर?''

''कई निर्दोष छोटे, मासूम बच्चों की तरह वह भी युद्ध के कहर में काल के गाल में समा गया. यह काफी पहले की बात है.''

हसन इन बातों को समझ नहीं पाया.

''लेकिन हसन, आशा हमेशा होती है और युवा पीढ़ी के लिए उस में बहुत कुछ है. कभी भी उम्मीद मत छोड़ना. क्या ऐसा कुछ है जिस में मैं तुम्हारी मदद कर सकूं? सिर्फ पूछ कर देखना.''

हसन मुसकराया और फिर फूटफूट कर रोने लगा और बोला, ''मैं टीचर से पढ़ना चाहता हूं, सर. मैं अपनी क्लास में वापस पढ़ने जाना चाहता हूं. फोन पर नहीं, जिस में खराब इंटरनैट है और उस कम्युनिटी रेडियो पर भी नहीं जहां मैं प्रश्न भी नहीं पूछ सकता हूं.''

सैनिक काफी समय तक उसे टकटकी लगाए देखता रहा और फिर उस ने अपना सिर हिलाया. ''मैं भी चाहता हूं हसन कि तुम्हारे पास किताबें और एक टीचर हो जो तुम्हें हरेक सप्ताह पढ़ाने के लिए आए.''

हसन का दिल धड़क उठा, 'क्या यह सच में होने जा रहा था? क्या उसे फिर से सीखने का मौका मिलेगा?'

''हम इस की व्यवस्था करेंगे, हसन. मैं वादा करता हूं.''

हसन की खुशी का ठिकाना नहीं था. वह कूदा और सैनिक के गले लग गया.

''अम्मी, क्या मैं सर को कुछ मोदुर पुलाव दे सकता हूं?''

अम्मी मुसकराईं और उन्होंने हसन को बौक्स सौंप दिया. हसन ने इसे अपने नए सैनिक दोस्त को थमा दिया.

''यह आप के लिए है, सर. यह मेरा पसंदीदा खाना है. साथ ही, क्या मैं आप को और कुछ दे सकता हूं? कृपया आप मुझे अपनी कलाई दिखाइए.''

सैनिक हैरानी से मुसकराया और अपना हाथ उस की ओर बढ़ा दिया.

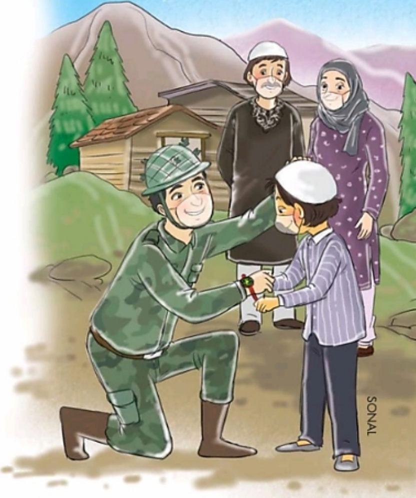

हसन ने बैग से राखी निकाली और उसे अपने नए दोस्त की कलाई पर बांध दिया.

''हम हमेशा तुम्हारी रक्षा करेंगे, हसन,'' सैनिक मुसकराया और उस ने उस के सिर को सहलाया.

वह वापस अपने ट्रक में आ गया और काम पर चला गया.

हसन और उस के परिवार वालों ने अपना बैग उठाया और चलने लगे. नन्हा बच्चा मक्के के खेतों से हो कर गुजरा, उस के हाथों ने मनुष्य की झुकी हुई फसलों के बीच विद्रोह में अंकुरित हुए जंगली फूलों को छुआ और जैसे ही कोमल फूल उस की छोटी सी हथेली से टकराए उस के चेहरे से मुरझाई मुसकान आरपार हो कर गुजर गई.

हसन ने जोश के साथ रफ्तार पकड़ी और सामने दिख रहे गांव की ओर दौड़ लगा दी जहां उस का नया घर और उस के सपने उस का इंतजार कर रहे थे.

वह बहुत खुश था, क्योंकि वह फिर से पढ़नेलिखने लायक हो गया था. ●

सुंदर रंग भरो

9 अगस्त को नैशनल स्पोर्ट्स डे है.

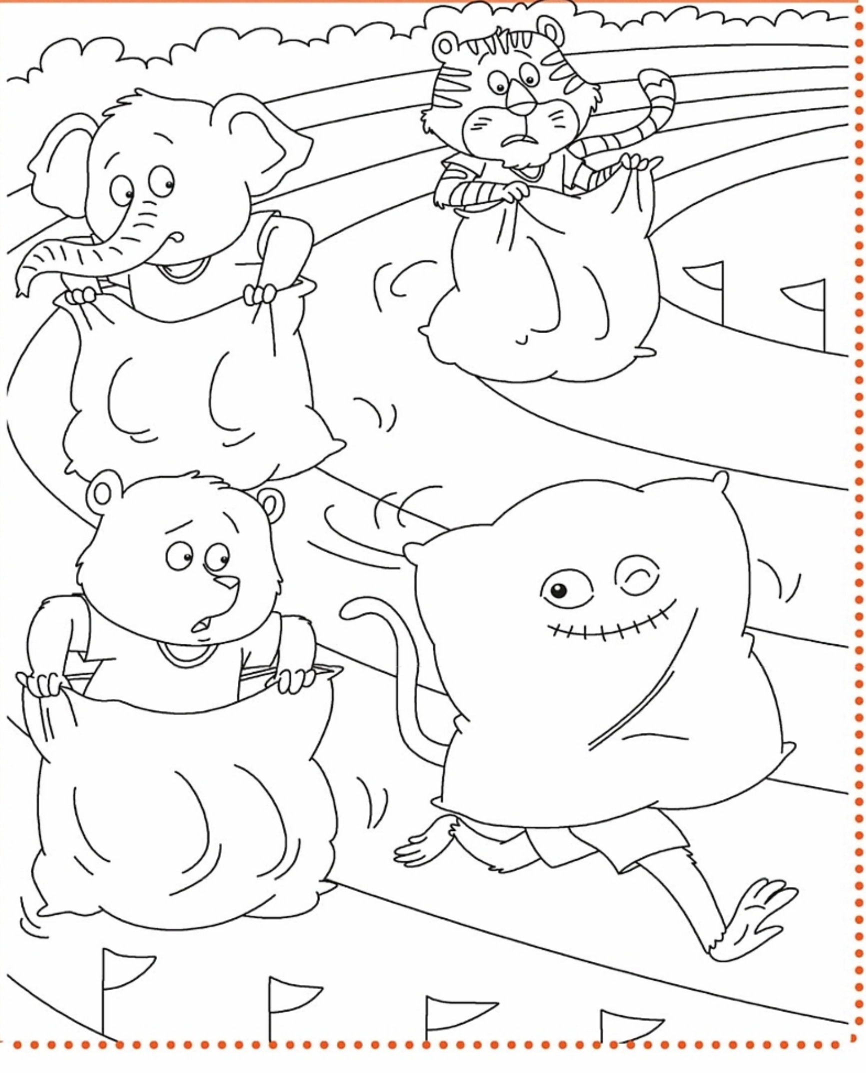

इन में सामान्य क्या है

22 अगस्त को रक्षाबंधन है. यहां कुछ चित्र जो क्षैतिजाकार, लंबवत यानी सीधे और एक कोने से दूसरे कोने तक दर्शाए गए हैं, इन में हरेक पंक्ति में सामान्य बात क्या है?

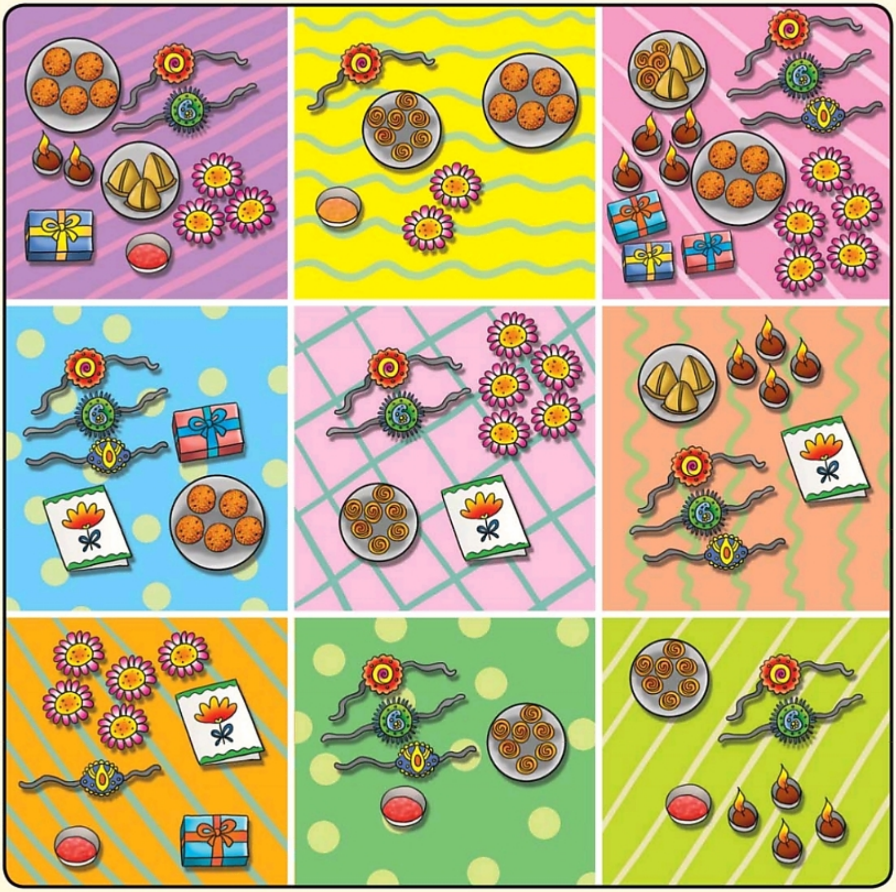

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

देखो हंस न देना

टीचर (छात्र से) : तुम ने कितनी दूर तक अपना होमवर्क कर लिया है?
छात्र : लगभग 4 किलोमीटर तक, सर.
टीचर : क्या कहा?
छात्र : हां, सर. मैं घर गया और इस के साथ वापस आ गया, सर.

कुशाल कुमार एस बी, 9 वर्ष, बैंगलुरु

सोशल स्टडीज के टीचर ने रौन से एक प्रश्न पूछा : भेड़ का निवास स्थान क्या कहलाता है?
रौन : मुझे पता नहीं है.
टीचर : इसे पैन कहा जाता है.
रौन : लेकिन एक भेड़ पैन के अंदर कैसे जा सकता है?

अनुश्री बनर्जी, 9 वर्ष, मुंबई

रोहित (मोहित से) : तुम चिकन को क्या कहोगे जो अपने अंडों की गिनती करे?
मोहित : एक मैथमाचिकेन.

आदित्य पंत, 12 वर्ष, देहरादून

टीचर (छात्रों से) : बच्चो, जो लोग चोरी करते हैं, उन्हें हम क्या पुकारेंगे?
छात्र : चोर कहेंगे.
टीचर : हम उस आदमी को क्या कहेंगे जो बहुत बातें करता है जबकि दूसरों की इस में रुचि न हो?
छात्र : उसे टीचर कहते हैं.

अथर्व त्रिपाठी, 10 वर्ष, नई दिल्ली

हाहाहा हाहाहा हीहीही हीहीही

सोनल (मोहित से) : तुम उस रौकेट को क्या कहोगे जो सूरज के पास जाना चाहता है?
मोहित : फ्रेंचफ्राई.

सात्विक सुंदर, 9 वर्ष, बैंगलुरु

किरण (सुमन से) : गुफाओं में रहने वाले लोगों के लिए स्कूल (झुंड) में रहना आसान क्यों था.
सुमनः क्योंकि वहां पर पढ़ने के लिए इतिहास नहीं था.

सिद्धार्थ गौतम, 9 वर्ष, उत्तर प्रदेश

बच्चा (आदमी से) : हैलो, क्या आप के पास एक रैफ्रीजेरेटर है?
आदमी : हां, है.
बच्चा : क्या यह काम कर रहा है?
आदमी : हां, करता है.
बच्चा : उसे पकड़ लीजिए, नहीं तो वह भाग जाएगा.
आदमी धप्प से फोन रख देता है.
कुछ देर बाद :
बच्चा : हैलो, क्या आप के पास एक रेफ्रीजेरेटर है?
आदमी (गुस्से में) : नहीं, मेरे पास नहीं है.
नटखट बच्चा : क्या मैं ने आप को नहीं बताया था कि उसे पकड़े रहना? नहीं तो वह भाग जाएगा?

रितिका विरमान्या, 10 वर्ष, नई दिल्ली

किट्टू (मीशू से) : भैंस अपने बेटे को क्या कहेगी जब वह कालेज जाए?
मीशू : बायसन.

समीना रंगवाला, 18 वर्ष, महाराष्ट्र

चीकू (बिट्टू से) : चोर अपने साथ साबुन ले कर क्यों चला था?
बिट्टू : क्योंकि वह लौकर को साफ करना चाहता था.

नीतिश गर्ग, 9 वर्ष, नई दिल्ली

हर्ष (विवेक से) : तुम रोज यानी गुलाब को क्या कहोगे जो रिंग पहने हो?
विवेक : रिंगारिंगा रोज.

सिद्धार्थ, 9 वर्ष, केरल

जज (चोर से) : तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई, वर्माजी के यहां दोबारा घुसने की?
चोर : सर, इस में मेरा कोई कुसूर नहीं है. उन के दरवाजे पर लिखा हुआ था, 'पुनः पधारें.'

विवेकवर्धन, 12 वर्ष, मंडावली, दिल्ली

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:
चंपक, दिल्ली प्रेस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई - 400031
ईमल : **writetochampak@delhipress.in**
और **SMS: 8657402248**
औनलाइन विजिट करें :
www.facebook.com/ChampakMagazine
https://www.youtube.com/ChampakSciQ

डमरू और राखियां

कहानी ● शिवेश श्रीवास्तव

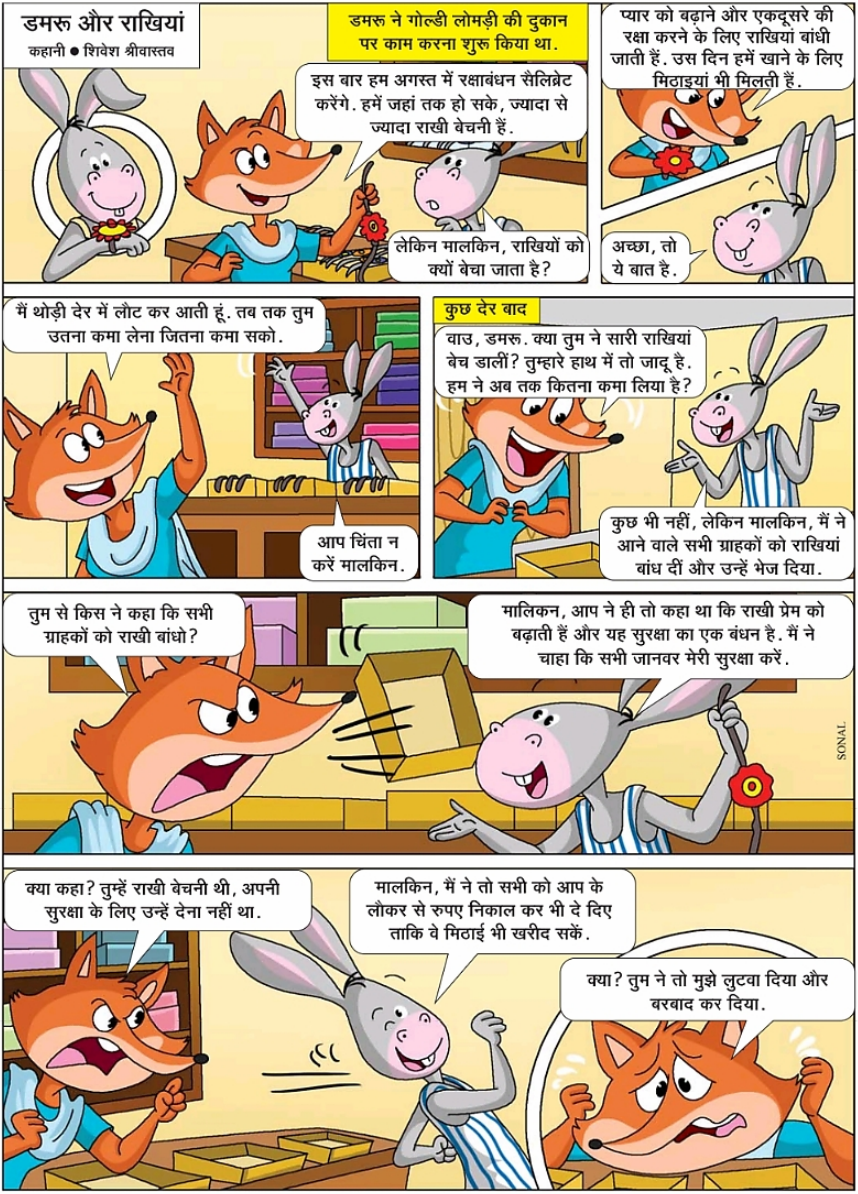
डमरू ने गोल्डी लोमड़ी की दुकान पर काम करना शुरू किया था.
इस बार हम अगस्त में रक्षाबंधन सैलिब्रेट करेंगे. हमें जहां तक हो सके, ज्यादा से ज्यादा राखी बेचनी हैं.
लेकिन मालकिन, राखियों को क्यों बेचा जाता है?
प्यार को बढ़ाने और एकदूसरे की रक्षा करने के लिए राखियां बांधी जाती हैं. उस दिन हमें खाने के लिए मिठाइयां भी मिलती हैं.
अच्छा, तो ये बात है.
मैं थोड़ी देर में लौट कर आती हूं. तब तक तुम उतना कमा लेना जितना कमा सको.
आप चिंता न करें मालकिन.
कुछ देर बाद
वाउ, डमरू. क्या तुम ने सारी राखियां बेच डालीं? तुम्हारे हाथ में तो जादू है. हम ने अब तक कितना कमा लिया है?
कुछ भी नहीं, लेकिन मालकिन, मैं ने आने वाले सभी ग्राहकों को राखियां बांध दीं और उन्हें भेज दिया.
तुम से किस ने कहा कि सभी ग्राहकों को राखी बांधो?
मालिकन, आप ने ही तो कहा था कि राखी प्रेम को बढ़ाती हैं और यह सुरक्षा का एक बंधन है. मैं ने चाहा कि सभी जानवर मेरी सुरक्षा करें.
SONAL
क्या कहा? तुम्हें राखी बेचनी थी, अपनी सुरक्षा के लिए उन्हें देना नहीं था.
मालकिन, मैं ने तो सभी को आप के लौकर से रुपए निकाल कर भी दे दिए ताकि वे मिठाई भी खरीद सकें.
क्या? तुम ने तो मुझे लुटवा दिया और बरबाद कर दिया.

रास्ता बताओ

23 से 27 अगस्त तक विश्व जल दिवस है. शीला और रोहित को कुएं से पानी खींचना पड़ रहा है क्योंकि सभी नल सूख गए हैं. बाल्टियों को घर तक ले जाने में उन की मदद कीजिए.

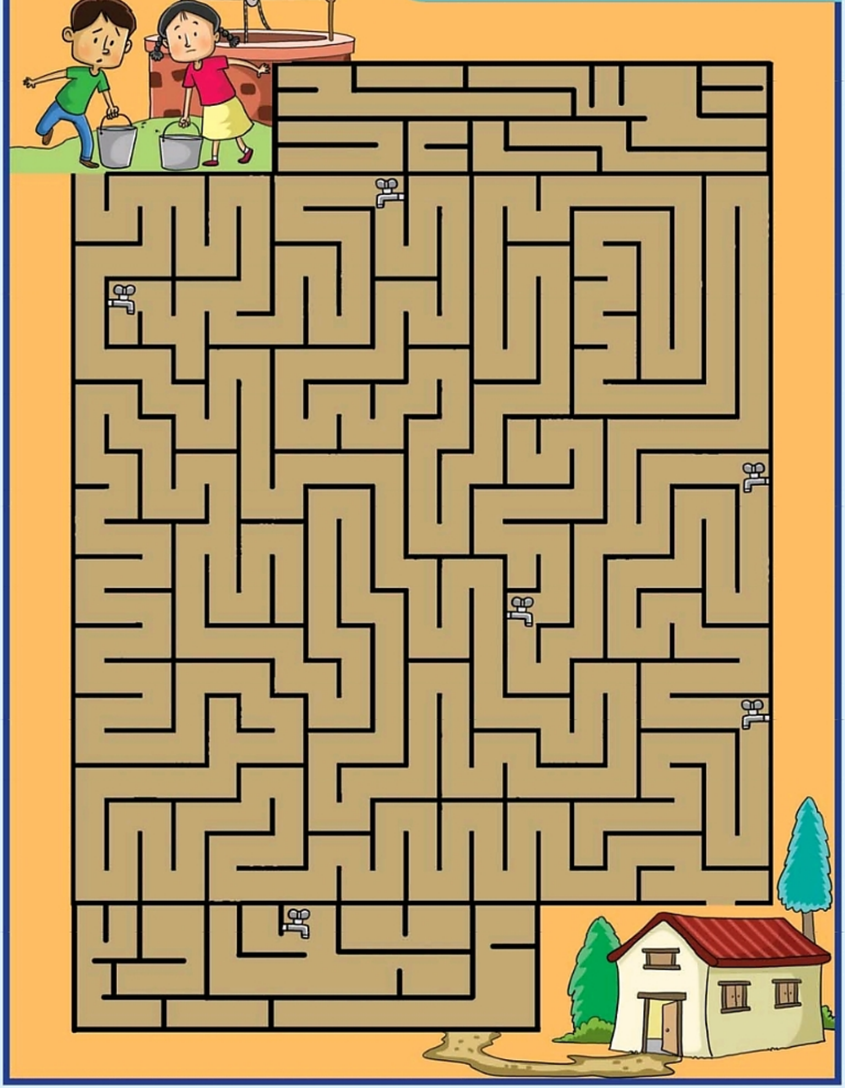

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

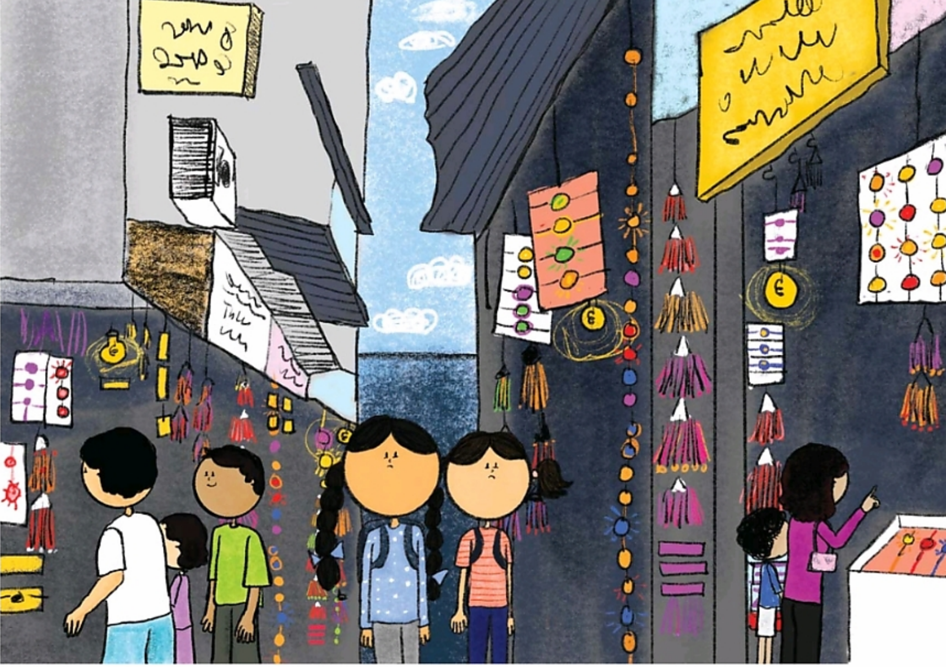

अनोखा रक्षाबंधन

कहानी ● वंदना गुप्ता

कूहू व पीहू दोनों सगी बहने थीं. कूहू पीहू से दो साल बड़ी थी. दोनों पढ़ाई में अच्छी थीं तथा घर में मां का काम में भी वे हाथ बटाती थीं.

कूहू को बागबानी का बहुत शौक था. उसे पेड़पौधों से काफी लगाव था. वह अपने घर पर बगीचे में नए पौधे लगाती तथा पुरानों की देखभाल करती थी.

कई बार वह मां को अपने बगीचे की सब्जियां भी ला कर देती थी. पीहू को कराटे का शौक था, वह हफ्ते में तीन दिन शाम को कराटे की क्लास जाती थी.

दोनों बहनें आमतौर पर खुश रहती थीं पर जब रक्षाबंधन का त्योहार आने वाला होता तो वे दुखी हो जाती थीं. बाजार तरहतरह की राखियों व उपहारों से सज जाते थे. सभी लड़कियां अपने भाइयों के लिए सुंदरसुंदर राखी व उपहार लाती थीं. लड़के भी अपनी बहनों के लिए रिटर्न गिफ्ट खरीदते पर कूहूपीहू ये काम नहीं कर पाती थीं इसलिए वे उदास हो जाती थीं.

इस साल भी रक्षाबंधन का त्योहार आने वाला था. मां सोच रही थीं कि ऐसा क्या करूं जो उन की बेटियां उदास न हों.

लेकिन उन्हें यह देख कर हैरानी हुई कि इस बार कूहू व पीहू खुश दिखाई दे रही थीं. वे बाजार जा कर चुपके से कुछ सामान खरीद लाईं और उसे छिपा कर रख दिया.

जल्दी ही रक्षाबंधन का दिन भी आ गया. दोनों बहनें सुबह ही नहाधो कर अच्छे कपड़े पहन कर तैयार हो गई थीं.

मां बहुत खुश थीं, क्योंकि हर साल आज के दिन वे दोनों अपने कमरे से बाहर ही नहीं निकलती थीं, खेलती भी नहीं थीं और खाना भी उन्हें जिद कर के खिलाना पड़ता था.

कुछ ही देर में दोनों बहनों ने दो थालियां सजा कर मेज पर रख दीं. उन में सुंदर राखियां और उपहार थे. साथ ही उन के साथ चौकलेट्स भी रखी थीं.

मां हैरान थीं, वे सोच रही थीं, 'ये आज किस को राखी बांधने वाली हैं?'

''क्या तुम दोनों ने राखी बांधने के लिए किसी को घर बुलाया है?'' मां ने पूछा.

''नहीं तो,'' कूहू व पीहू दोनों ने एक स्वर में कहा.

''तो तुम ये राखी किस के लिए लाई हो?''

''मैं ये राखी पीहू को बांधूंगी,'' कूहू ने बताया.

''लेकिन मैं तुम्हारा भाई थोड़ी हूं? मैं तो लड़की हूं,'' पीहू बोली.

''लड़कालड़की क्या होता है? भाइयों को राखी इसीलिए तो बांधते हैं कि वे अपनी बहन की हमेशा रक्षा करें, पर जब कोई किसी को प्यार करे, उस का ध्यान रखे, मुसीबत में साथ दे तो हम उसे प्यार से राखी बांध सकते हैं, चाहे वह लड़का हो या लड़की. याद करो, पिछले महीने की वह घटना जब तुम ने उस गुंडे से मेरी रक्षा की थी.''

''ये कब हुआ, तुम ने मुझे बताया ही नहीं?'' मां ने कहा.

''मां, जब हम दोनों उस दिन सुधा आंटी के घर से लौट रही थी, मेरे हाथ में सामान से भरा बैग था, उस में मेरा पर्स भी था. लुटेरा मेरा बैग छीन कर भाग गया. मैं तो डर कर भौचक्की खड़ी रह गई थी, पर पीहू उस के पीछे भागी और कुछ ही दूर जा कर उसे पकड़ लिया. फिर जब इस ने अपने कराटे के हाथ दिखाए तो उस लुटेरे की ऐसी हालत हो गई कि

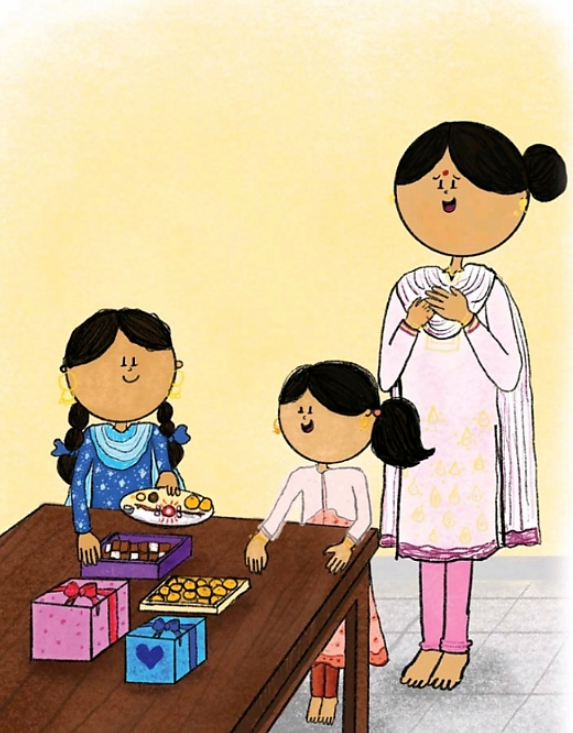

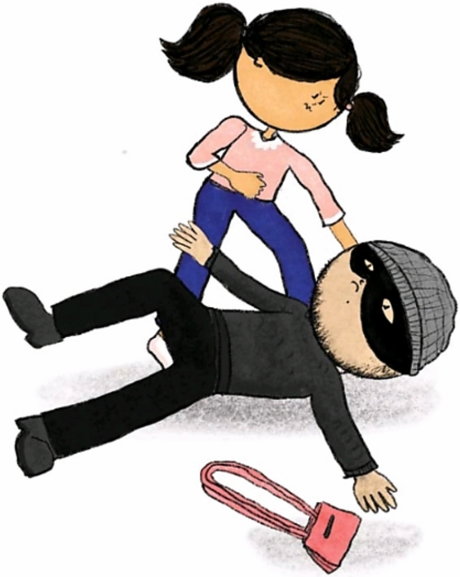

वह बैग छोड़ कर जान बचाने के लिए भागा. मुझे नहीं लगता कि वह कभी इस इलाके में दोबारा आने की हिम्मत करेगा,'' कूहू ने कुछ इस तरह ऐक्शन कर के बताया कि सभी हंस पड़े.

''मेरी रक्षा तो तुम ने ही की है इसलिए मैं तो तुम्हें ही राखी बांधूंगी, पर तुम किस के लिए राखी लाई हो?'' कूहू ने पीहू से पूछा.

''तुम्हारे लिए दीदी,'' पीहू ने बताया.

''मेरे लिए? मैं ने तुम्हारी रक्षा कब की?'' कूहू हैरान थी.

''तुम तो मेरी ही नहीं सारे पर्यावरण की रक्षा करती हो.''

''क्या मतलब? मैं कुछ समझी नहीं.''

''हमारी टीचर ने कुछ दिन पहले हमें बताया था, पेड़पौधे लगाने व उन की देखभाल करने से हमें शुद्ध हवा मिलती है, जो सब को जीवित रहने के लिए जरूरी है. तुम तो सुबहशाम यही काम करती हो, जितने प्राणियों की तुम रक्षा करती हो यदि सभी तुम्हें राखी बांधने लग जाएं तो तुम्हारे हाथ छोटे पड़ जाएंगे,'' पीहू ने कंधे पर हाथ रख कर बताया तो कूहू खिलखिला कर हंस पड़ी.

''इसलिए दीदी सब की तरफ से मैं ही तुम्हें राखी बांधूंगी.''

बच्चों को रक्षाबंधन वाले दिन हंसतेखिलखिलाते देख मां बहुत खुश हुईं. उन्होंने मन ही मन सोचा, 'मैं तो सोचती

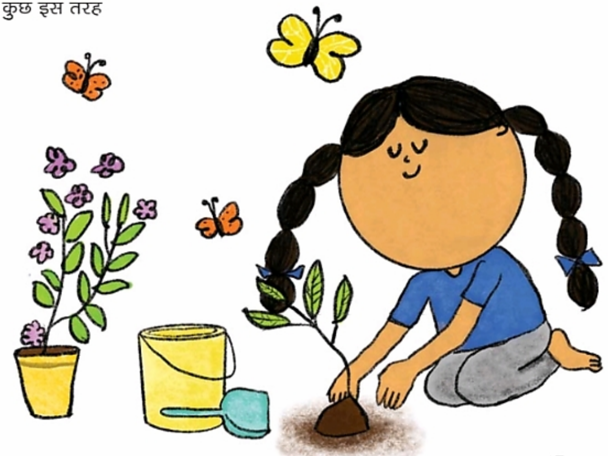

ही रह गई कि इन की उदासी दूर करने के लिए क्या करूं पर उन्होंने तो खुद ही हल निकाल लिया.'

तभी दूसरे कमरे से पापा ताली बजाते हुए आए, ''मैं तुम्हारी सारी बातें सुन रहा था, मुझे नहीं पता था कि हमारी बेटियां इतनी बहादुर व समझदार हो गई हैं. तुम ने बहुत अच्छा निर्णय लिया है.''

''क्या तुम जानते हो बच्चो, पहले लड़कियों की पढ़ाईलिखाई व खेलकूद पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता था. उन्हें आजादी भी नहीं थी. उस समय सब की सोच ऐसी थी कि भाई ही उन की रक्षा करेंगे, तब ऐसे रीतिरिवाज बनाए गए थे, पर आज लड़कियां हर क्षेत्र में लड़कों से आगे हैं, वे अपनी रक्षा खुद ही कर सकती हैं. साथ ही दूसरे की मदद करने में भी पीछे नहीं रहतीं, तो उन्हें भी राखी बांधी जा सकती है.''

''चलो, इस खुशी के मौके पर हम सब आज बाहर जाएंगे व तुम्हारी पसंद की जगह डिनर कर के आएंगे.''

''हुर्रे,'' यह सुन कर दोनों बहनें खुशी से झूम उठीं. उन्होंने एक दूसरे को राखी बांधी, उपहार दिए व मिठाई खिलाई.

पापा ने उन दोनों के फोटो खींचे और उन्हें सभी रिश्तेदारों व दोस्तों को भेज दिया. सभी ने इस अनोखे रक्षाबंधन की खूब तारीफ की. ●

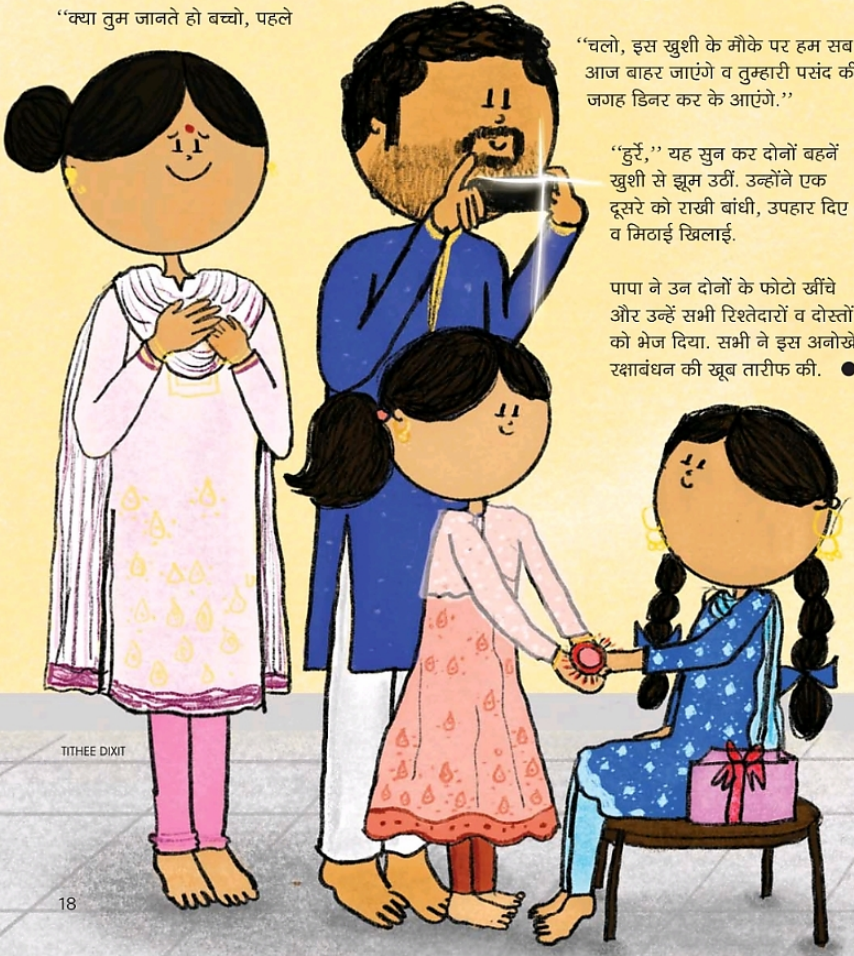

TITHEE DIXIT

मजेदार विज्ञान

ग्लू को नमक के उपयोग से गायब करें

आइए, नमक के गुणों की पड़ताल करते हैं.

आप को चाहिए :

- सफेद ग्लू (गोंद)
- नमक

ऐसा करें :

1. अपने हाथ में सफेद गोंद डालें.

2. ग्लू में थोड़ा सा नमक मिलाएं.

3. इसे कम से कम 1 मिनट तक धीरेधीरे मिलाएं.

सोचें :

ग्लू यानी गोंद गायब क्यों होता है?

सफेद गोंद में ऐसे पदार्थ होते हैं जो जल आधारित होते हैं. जब नमक को सफेद गोंद में मिलाया जाता है, तो यह इस में से पानी की मात्रा को सोख यानी अवशोषित कर लेता है क्योंकि यह हाइट्रोस्कोपिक यानी द्रवग्राही पदार्थ है. एक हाइग्रोस्कोपिक यानी द्रवग्राही पदार्थ अपने आसपास से पानी को अवशोषित कर लेता है. जब यह पानी को सोखता है तो गोंद के चिपचिपेपन को भी अपने साथ ले जाता है. नमक या सोडियम क्लोराइड का एक अणु ऋणावेशित क्लोराइड से और विद्युत आवेश वाले धनात्मक रूप से आवेशित सोडियम आयन से बना होता है. क्लोराइड आयन पानी में धनआवेशित हाइड्रोजन आयनों को आकर्षित करते हैं और सोडियम आयन ऋणावेशित औक्सीजन के आयान के पानी में आकर्षित करते है.

हमारे इस प्रयोग में गोंद गायब नहीं होता. वह नमक के साथ मिल गया है और छोटेछोटे सूखे गुच्छे बनाता है, जो नमक की तरह दिखते हैं और दोनों ही सफेद रंग के हैं, इसलिए आप सोचते हो कि गोंद गायब हो गया है.

देखें :

कुछ देर मिलाने के बाद आप देखेंगे कि गोंद ने अपना चिपचिपापन खो दिया है. साथ ही नमक ने छोटेछोटे गुच्छों का निर्माण भी कर लिया है, जिस से आप आसानी से अपने हाथ हिला सकते हैं.

पता करें :

SILICA GEL
DESICCANT DO NOT EAT
SILICA GEL THROW AWAY

कुछ उत्पादों के साथ सिलिका जेल के पैकेट्स क्यों मिलते हैं?

छोटेछोटे पैकेट्स जो आप को कभीकभी चमड़े के जूते के डब्बे में मिलते हैं या किसी अन्य भंडारण बक्से में मिलते हैं, ये सिलिका जेल के पैकेट्स हैं. ये सिलिका जेल पैकेट्स अपने आसपास की नमी को सोख लेते हैं और हवा को सूखा बनाए रखते हैं और इन्ही सब कारणों से इन का इस्तेमाल गैजेट बौक्सों से नमी को सोखने के लिए किया जाता है, क्योंकि पानी इलैक्ट्रोनिक्स वस्तु को बरबाद कर सकता हैं.

बताओ तो जानें

1. मैं लंबी और पतली हूं
खोखली और हल्की हूं
ड्रिंक में मुझे डाल कर
मेरे द्वारा ड्रिंक की चुस्की लो.

2. बैटरियों का जीवन बढ़ाता हूं
मैं छोटा या लंबा हो सकता हूं
मैं तेज या धीमा होता हूं,
काला या सफेद रंग में आता हूं.

3. विश्व के आरपार फैला हूं
कहीं भी जाओ, तुम्हारे ऊपर होता हूं
मौसम के अनुसार रंग बदलता हूं
मुझ में तारे समाए हुए हैं.

4. बाहर से मेरा शरीर कड़ा है
मैं समुद्र में तैरता हूं
धरती पर भी आ जाता हूं
रेत में गड्ढे खोदता हूं.

देखें तुम कितना जानते हो

1. विश्व शौकिया बिलियड्‌र्स का खिताब जीतने वाला प्रथम भारतीय कौन था?
   (क) गीत सेठी
   (ख) विल्सन जौन्स
   (ग) माइकल फैरेरा
   (घ) मनोज कोठारी

2. याहू को किस ने विकसित किया?
   (क) डेविड फिलो और जैरी यांग
   (ख) डैनिश रिच्ची और केन थौंपसन
   (ग) विंट सेर्फ और रौबर्ट कोहन
   (घ) स्टीव केसी और जेफ बेजोस

3. इन में से कौन सी सब से हल्की धातु है?
   (क) पारा
   (ख) लिथियम
   (ग) शीशा
   (घ) चांदी

4. ग्रामोफोन का आविष्कार किस ने किया था?
   (क) माइकल फैराडे
   (ख) अल्बर्ट आइंस्टीन
   (ग) सर अलैक्जेंडर ग्राहम बैल
   (घ) थौमस अल्वा एडिसन

उत्तर (बताओ तो जानें) : 1–स्ट्रा, 2–चार्जर, 3–आसमान, 4–केकड़ा.
उत्तर (देखें कितना जानते हो?) : 1–ख, 2–क, 3–ख, 4–घ.

यादगार ट्रिप

कहानी ● इंद्रजीत कौशिक

पंकज आज बहुत खुश नजर आ रहा था. न तो उस की कोई लौटरी लगी थी और न ही उसे कोई बड़ा गिफ्ट मिला था. खुशी मानो उस के चेहरे से टपक रही थी. बात बस इतनी सी थी कि उस के दोस्त सुधीर ने उसे अपने गांव आने का न्योता दिया था.

''तुम्हारे गांव में कोई तालाब है क्या? और यदि तालाब होगा तो उस में भैंसें भी नहाती होंगी,'' पंकज गांव के बारे में सोच कर काफी उत्साहित था.

सुधीर ने कहा, ''हां दोस्त, हमारे गांव का तालाब बहुत साफसुधरा है. तुम चाहो तो भैंस की सवारी के मजे भी ले सकते हो.''

''खेत भी होंगे? वहां क्याक्या उपजता है?'' पंकज जैसे गांव के खयाल में खो सा गया था.

सुधीर मुसकराते हुए बोला, ''अब सारी बातें यहीं पर करोगे. वहां चल कर देखने का इरादा नहीं है क्या? एक बात बताऊं? हमारे गांव से थोड़ी दूर घना जंगल भी है. मैं तुम्हें वहां घूमा कर लाऊंगा.''

''अरे, बाप रे जंगल, फिर तो वहां शेर, चीते, भालू भी होंगे,'' पंकज बोला. अपने दोस्त के गांव जाने के लिए उस की बेचैनी बढ़ती जा रही थी.

आखिर वह दिन भी आ गया. पंकज अपने दोस्त सुधीर के साथ उस के गांव मीरपुर जा पहुंचा. गांव बिलकुल वैसा ही था जैसा पंकज ने सोचा था.

यहां का वातावरण तो बिलकुल शांत और स्वच्छ है. शहर के शोरशराबे और भीड़भाड़ से एकदम अलग. यहां आ कर पंकज को बहुत अच्छा लग रहा था.

सुधीर का घर आधा कच्चा और आधा पक्का बना हुआ था. पास ही शेड में दो गाय और एक भैंस बंधी हुई थी.

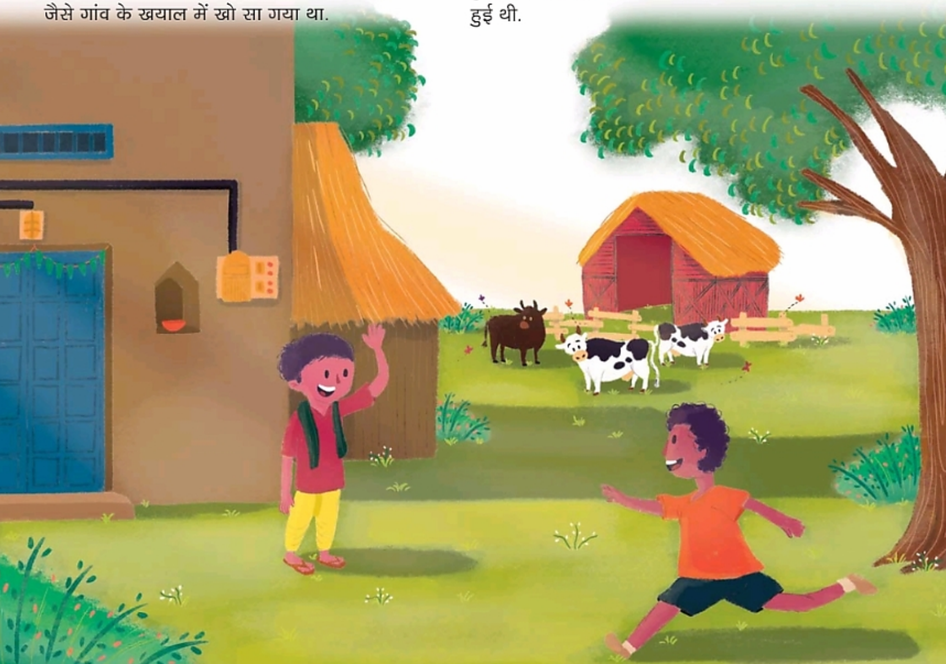

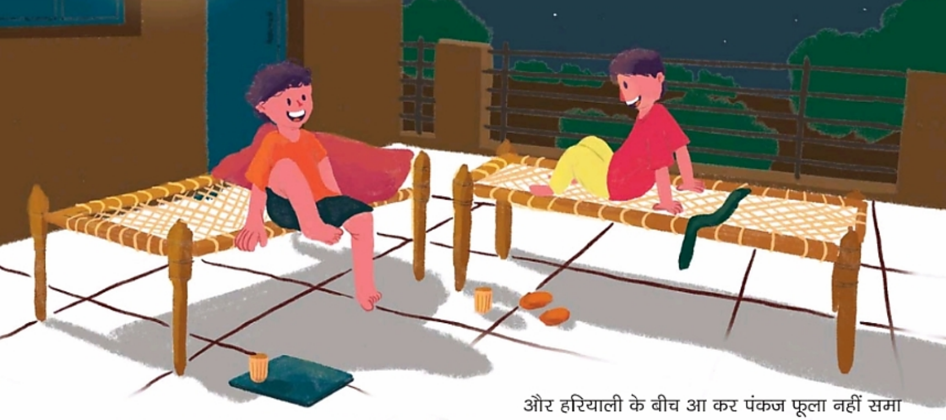

सुधीर के घर वालों ने उन का गर्मजोशी से स्वागत किया. सुधीर ने ताजे निकाले गाय के दूध की चाय पंकज को पिलाई.

शाम के खाने में सुधीर ने अपने खेत की सब्जी, मक्के और बाजरे की मिक्स रोटी बनवाई. घर का शुद्ध देसी घी अपनी अलग महक बिखेर रहा था.

सुधीर के घर वालों ने बड़े प्यार से पंकज की आवभगत की. दोनों दोस्त छत पर चले गए और काफी देर तक बातें करते रहे.

पंकज जैसे कोई सपना देख रहा हो, दोतीन दिन कैसे बीते उसे पता ही नहीं चला.

''कल मैं तुम्हें जंगल की सैर करा कर लाऊंगा,'' सुधीर ने अपने दोस्त पंकज से कहा तो जंगल के नाम से ही वह रोमांचित हो उठा.

''पर हम वहां रहेंगे कहां?'' पंकज ने सवाल किया तो सुधीर मुसकरा दिया.

''मेरे चाचाजी ने वहां पर एक छोटा सा कमरा बनवा रखा है. जहां वे कभीकभी जा कर रहते हैं. हम दोनों भी वहीं पर रुकेंगे,'' सुधीर ने उस की शंका का समाधान करते हुए कहा.

जंगल सचमुच बहुत घना था. चारों तरफ लंबेलंबे पेड़ और हरियाली के बीच आ कर पंकज फूला नहीं समा रहा था.

पूरे दिन सुधीर ने उसे जंगल में घुमाया. वह वहां उगे तरहतरह के पेड़ों के बारे में उसे बताता तो पंकज दांतों तले उंगली दबा लेता.

''तुम यहां कमरे में आराम करो, तब तक मैं कहीं से खानेपीने के लिए फल वगैरा ले कर आता हूं,'' सुधीर ने अपने दोस्त को कमरे में आराम करने के लिए कहा और खुद थोड़ी देर बाद आने को कह कर चला गया.

रात हो चुकी थी, इसलिए सुरक्षा के लिहाज से पंकज ने कमरे का दरवाजा अंदर से बंद कर लिया और वहां रखी चारपाई पर लेट गया.

घने जंगल में अकेले इस तरह रहने का उस का यह पहला अनुभव था, इसलिए मन ही मन कुछ डर भी लग रहा था, पर सुधीर का साथ होने से उसे किसी बात की फिक्र नहीं थी.

वह अपने दोस्त के लौटने का इंतजार करतेकरते न जाने कब सो गया. अचानक कुछ खटपट की आवाज हुई तब उस की नींद खुली.

'लगता है सुधीर आ गया, मैं दरवाजा खोलता हूं,' आधी खुली आंखों से उस ने खड़े होने की कोशिश की ही थी कि तभी उस की नजर पास रखे स्टूल पर पड़ी तो उस के रोंगटे खड़े हो गए.

उस ने वहां जो कुछ देखा उस के बाद तो पंकज की हालत ऐसी हो गई कि काटो तो खून नहीं. उस की आंखें पथरा गईं और जबान तालू से चिपक गई.

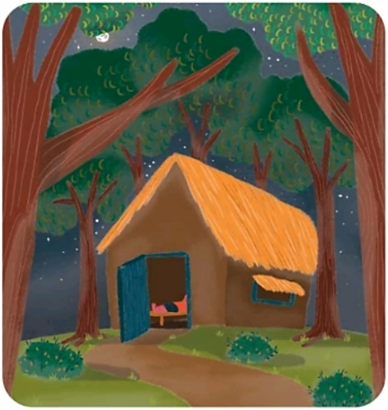

वह जोर से चीखना चाहता था पर सबकुछ मुंह के भीतर ही अटक कर रह गया, क्योंकि उस के ठीक सामने स्टूल पर एक तेंदुआ अपनी लाल आंखों से उस की तरफ देख रहा था.

पंकज मन ही मन उस घड़ी को कोस रहा था, जब उस ने जंगल में आने की हां भरी थी. उसे लगा कि किसी भी पल तेंदुआ उस पर अटैक कर सकता है.

लेकिन उस ने अपना धैर्य नहीं खोया और हिम्मत बनाए रखी. उसे अपने पिता से सुनी वह बात याद आ गई कि शेर, चीते और तेंदुए को आग से बहुत डर लगता है.

बस फिर क्या था, पंकज ने हिम्मत दिखाई और जल्दी अलाव से एक जलती हुई लकड़ी उठा ली.

चीते जैसी फुर्ती दिखाते हुए पंकज ने उस जलती हुई लकड़ी को स्टूल पर बैठे तेंदुए की तरफ बढ़ा दिया. उस के ऐसा करते ही तेंदुआ एक पल के लिए भी वहां नहीं रुका और खिड़की के रास्ते बाहर भाग गया.

पंकज ने लपक कर खिड़की को भीतर से बंद कर लिया, जो शायद गलती से खुली रह गई थी और उसी रास्ते तेंदुआ भीतर घुस आया था.

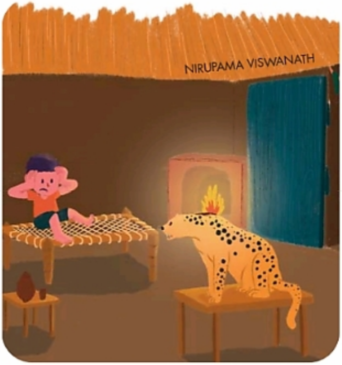

पंकज के दिल की धड़कन बहुत तेजी से चल रही थी. तभी दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी तो वह फिर से चौंक गया.

‘‘पंकज, दरवाजा खोल, मैं हूं तेरा दोस्त सुधीर. सो तो नहीं गया तू?’’ बाहर से आवाज आई तो पंकज के दिल की धड़कन कुछ कम हुई.

उस ने तुरंत भीतर से दरवाजे की कुंडी खोल दी, ‘‘क्या हुआ, तू इतना घबराया हुआ क्यों है?’’ सुधीर ने अपने दोस्त को पसीनेपसीने होते देख कर पूछा तो उस ने पूरी बात एक सांस में बता दी.

‘‘अरे, वाह, तू तो बड़ा साहसी निकला मेरे दोस्त. अकेले दम पर तू ने तेंदुए को भगा दिया. मुझे तुम पर गर्व है मेरे दोस्त,’’ कहते हुए सुधीर ने पंकज को गले लगा लिया.

‘‘न जाने मेरे भीतर कहां से इतनी हिम्मत आ गई थी वरना वह मेरा क्या हाल करता?’’ पंकज बोला.

‘‘मुसीबत के समय धीरज न खो कर उस का मुकाबला हिम्मत के साथ किया जाए तो परिणाम अच्छा ही रहता है,’’ सुधीर ने कहा और फिर दोनों दोस्त मिल कर भोजन करने लगे.

पंकज के लिए वास्तव में अपने दोस्त के गांव का यह ट्रिप यादगार बन गया था. ●

चीकू

चित्रकथा : दास

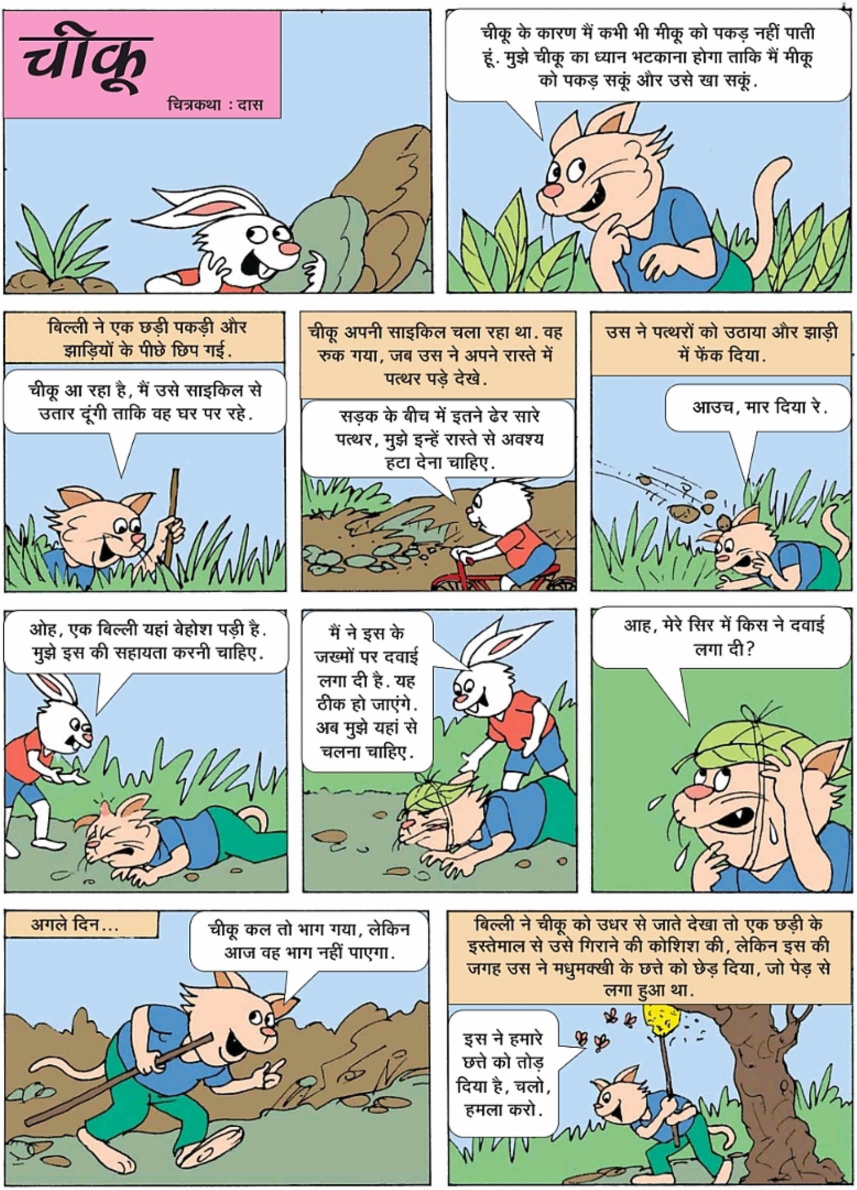
चीकू के कारण मैं कभी भी मीकू को पकड़ नहीं पाती हूं. मुझे चीकू का ध्यान भटकाना होगा ताकि मैं मीकू को पकड़ सकूं और उसे खा सकूं.
बिल्ली ने एक छड़ी पकड़ी और झाड़ियों के पीछे छिप गई.
चीकू आ रहा है, मैं उसे साइकिल से उतार दूंगी ताकि वह घर पर रहे.
चीकू अपनी साइकिल चला रहा था. वह रुक गया, जब उस ने अपने रास्ते में पत्थर पड़े देखे.
सड़क के बीच में इतने ढेर सारे पत्थर, मुझे इन्हें रास्ते से अवश्य हटा देना चाहिए.
उस ने पत्थरों को उठाया और झाड़ी में फेंक दिया.
आउच, मार दिया रे.
ओह, एक बिल्ली यहां बेहोश पड़ी है. मुझे इस की सहायता करनी चाहिए.
मैं ने इस के जख्मों पर दवाई लगा दी है. यह ठीक हो जाएंगे. अब मुझे यहां से चलना चाहिए.
आह, मेरे सिर में किस ने दवाई लगा दी?
अगले दिन...
चीकू कल तो भाग गया, लेकिन आज वह भाग नहीं पाएगा.
बिल्ली ने चीकू को उधर से जाते देखा तो एक छड़ी के इस्तेमाल से उसे गिराने की कोशिश की, लेकिन इस की जगह उस ने मधुमक्खी के छत्ते को छेड़ दिया, जो पेड़ से लगा हुआ था.
इस ने हमारे छत्ते को तोड़ दिया है, चलो, हमला करो.

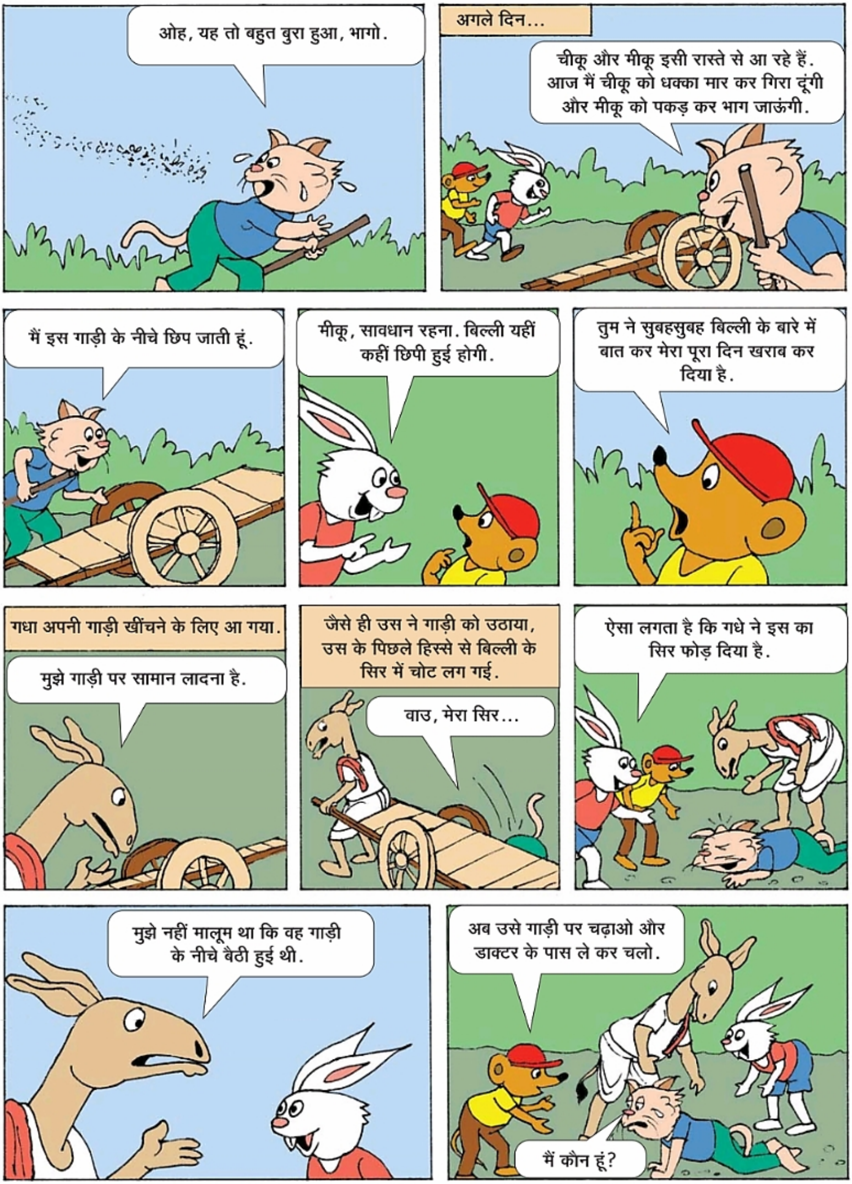
ओह, यह तो बहुत बुरा हुआ, भागो.
अगले दिन...
चीकू और मीकू इसी रास्ते से आ रहे हैं. आज मैं चीकू को धक्का मार कर गिरा दूंगी और मीकू को पकड़ कर भाग जाऊंगी.
मैं इस गाड़ी के नीचे छिप जाती हूं.
मीकू, सावधान रहना. बिल्ली यहीं कहीं छिपी हुई होगी.
तुम ने सुबहसुबह बिल्ली के बारे में बात कर मेरा पूरा दिन खराब कर दिया है.
गधा अपनी गाड़ी खींचने के लिए आ गया.
मुझे गाड़ी पर सामान लादना है.
जैसे ही उस ने गाड़ी को उठाया, उस के पिछले हिस्से से बिल्ली के सिर में चोट लग गई.
वाउ, मेरा सिर...
ऐसा लगता है कि गधे ने इस का सिर फोड़ दिया है.
मुझे नहीं मालूम था कि वह गाड़ी के नीचे बैठी हुई थी.
अब उसे गाड़ी पर चढ़ाओ और डाक्टर के पास ले कर चलो.
मैं कौन हूं?

बिंदु मिलाओ

अंकों के अनुसार बिंदुओं को मिलाएं और चित्र पूरा करें.

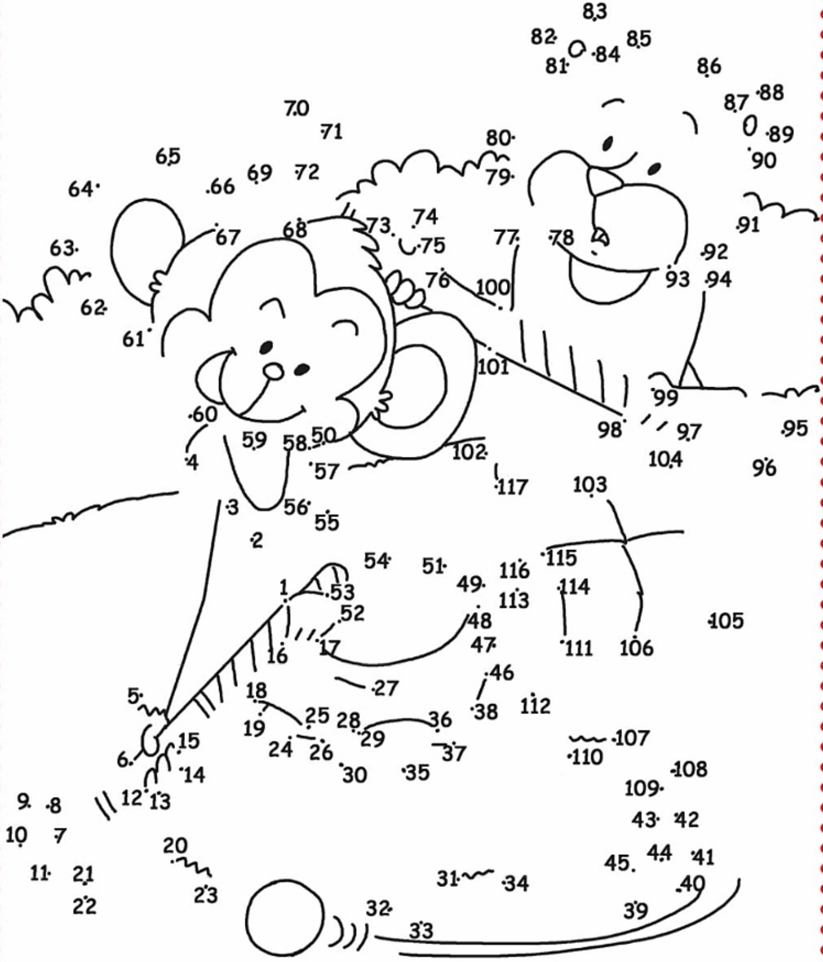
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117

हमारे राष्ट्र निर्माता

राष्ट्र निर्माण में इन प्रधानमंत्रियों द्वारा की गई पहल और उन के योगदान के साथ इन का मिलान करें.

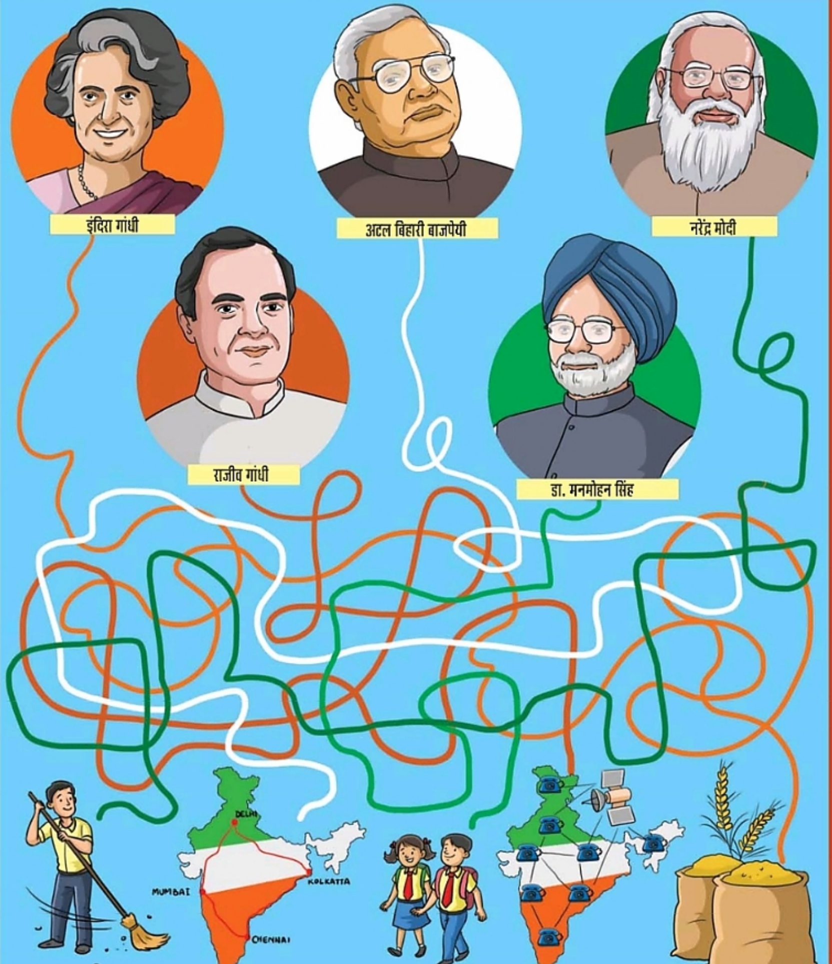
इंदिरा गांधी
अटल बिहारी वाजपेयी
नरेंद्र मोदी
राजीव गांधी
डा. मनमोहन सिंह
DELHI
MUMBAI
KOLKATTA
CHENNAI

स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत की.

4 शहरों को जोड़ने के लिए स्वर्ण चतुर्भुज प्रोजैक्ट की शुरुआत की.

शिक्षा का अधिकार अधिनियम अस्तित्व में आया.

संपूर्ण भारत में संचार व्यवस्था नैटवर्क ने क्रांति ला दी.

खाद्य उत्पादन में भारत को आत्मनिर्भर बनाया.

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

जनता की आवाज

कहानी ● निखिल अग्रवाल

‘‘मैं आप सभी जंगलवासियों का बहुत आभारी हूं, जो आप ने मुझे सेवा करने का अवसर दिया,’’ शेरसिंह अपनी गुफा के सामने सभी को संबोधित कर रहा था.

चंपकवन में हाल ही में चुनाव हुए थे, जिस में शेरसिंह को भारी बहुमत से जीत मिली थी. उस ने आखिर इस के लिए कड़ी मेहनत भी की थी. चुनाव के दौरान उस ने अपना 90 किलोग्राम वजन कम कर लिया था. इसी जीत के जश्न के लिए शेरसिंह ने कुछ चुनिंदा जंगलवासियों को दावत में आमंत्रित किया था. यह कोविड का दौर था और चंपकवन भी इस से अछूता नहीं था. दो बार से जीत रहे टोटो टाइगर को उस ने हराया था, लेकिन उसे भी अपने साथियों के साथ आमंत्रित किया था.

‘‘आप सभी दावत का आनंद लीजिए और आने वाले सुखी जीवन की खुशियां मनाइए,’’ शेरसिंह बोला. सभी जानवर अपने नए राजा से बेहद खुश थे.

उन के दो शिष्य थे, एक हरि लकड़बग्घा और दूसरा जैकी सियार. दोनों बाहर से आने वाले सभी अतिथियों के हाथों पर सैनिटाइजर छिड़क रहे थे. वे दोनों बड़े धूर्त और चालाक थे. दोनों ने शेरसिंह की जीत के लिए एड़ीचोटी का जोर लगा दिया था. वे उस के बहुत पुराने साथी थे. उस ने उन्हें अपना सलाहकार नियुक्त कर लिया था.

स्वादिष्ठ भोजन और नाचगानों के शानदार आयोजन के बाद सब अपने घर चले गए. आने वाला समय चंपकवन के लिए एकदम नया और सुखी होने वाला था. यही सोच कर सब चैन की नींद सो गए.

चंपकवन और आसपास के अन्य वन भी कोविड

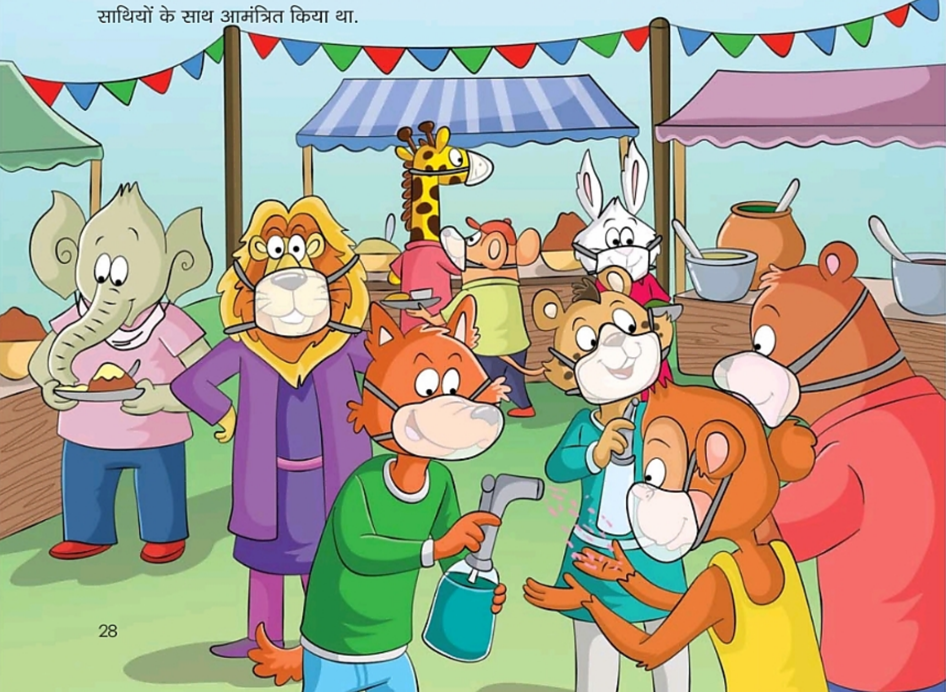

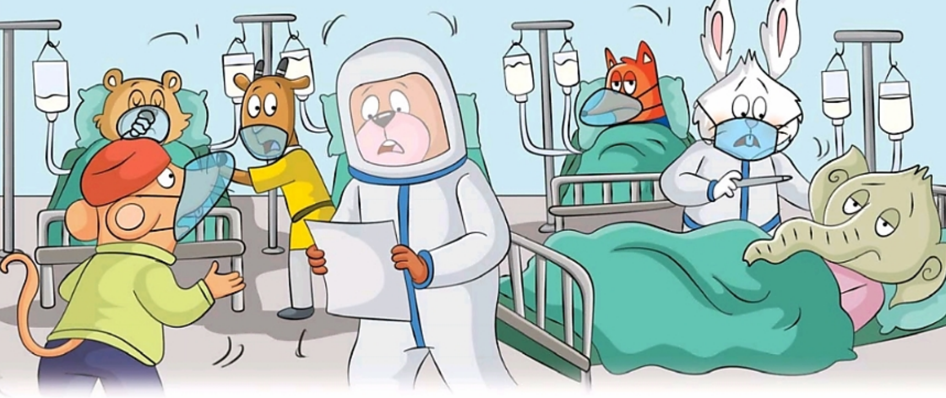

महामारी के मुश्किल दौर का सामना कर रहे थे. ज्यादातर शिकायतें कोविड से संबंधित थीं. कभी किसी को अस्पताल में बेड की जरूरत थी तो किसी को औक्सीजन चाहिए थी. हरि और जैकी को पूरे जंगल में घूम कर निगरानी रखने का कार्य सौंपा गया था ताकि यदि किसी को कोई दिक्कत हो तो वह तुरंत इस की जानकारी दें. जंगलवासी उन से सीधे जा कर भी शिकायत कर सकते थे.

बेड, औक्सीजन व दवाओं के साथसाथ अब सभी के टीकाकरण की समस्या भी उस के सामने थी. चंपकवन में सब चीजों का अभाव था. कुछ महीने तक शेरसिंह ने भरसक प्रयास किया, पर शिकायतें खत्म होने का नाम नहीं ले रही थीं और आखिर एक दिन उस का सब्र का बांध टूट गया. उस ने अपने शिष्यों को बुलाया.

''हां सर,'' जैकी ने कहा.

शेरसिंह दहाड़ा,'' मैं तंग आ गया हूं. शिकायतों का कोई अंत नहीं है. मैं ने तुम दोनों को शिकायतें लेने के लिए भेजा था, लेकिन वे सब तो मेरे सिर पर ही चढ़ गए.''

''सही कह रहे हैं आप,'' हरि बोला, ''वे आप को हर छोटे काम के लिए बुलाते हैं.''

''क्या सबकुछ मैं ही करूं? वे खुद भी तो अपनी समस्या हल कर सकते हैं,'' शेरसिंह बोला. दोनों ने हामी में सिर हिलाया.

''अब से तुम दोनों शिकायतें लेना बंद करो,'' शेरसिंह बोला, ''और यदि कोई शिकायत करे, तो उन से कहो उस का हल खुद खोजें. चंपकवन के राजा को और भी बहुत काम हैं,'' इतना कह कर वह अपनी गुफा में आराम करने चला गया.

''जी सरकार,'' जैकी बोला और वे दोनों चले गए.

एक दिन नदी किनारे उन्होंने गीगी बकरी को पानी भरते हुए देखा. उसे अपना कोविड टेस्ट करवाना था, जिस में उसे काफी परेशानी हो रही थी. इस से पहले वे दोनों उस से नजरें बचा कर निकल पाते तभी उस ने उन्हें पकड़ लिया.

''अरे, जैकी कैसे हो भाई? टेस्ट का क्या हुआ? मुझे यहां कोई भी टेस्ट करने वाला नहीं मिल रहा है. बहुत दिक्कत हो रही है,'' गीगी ने पूछा.

''राजा इस बारे में जानता है, जल्द ही उस का समाधान भी हो जाएगा. तब तक थोड़ा धीरज रखो,'' जैकी बोला.

''टेस्ट जल्दी हो जाता तो मुझे यह पता लग जाता कि इलाज की जरूरत है या नहीं,'' गीगी बोली.

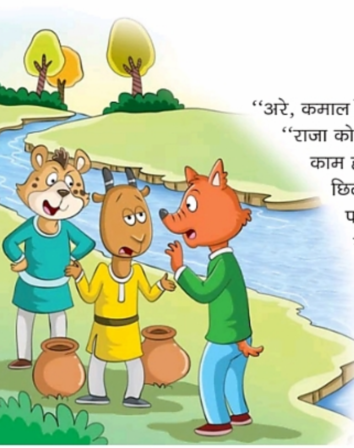

"अरे, कमाल है," हरि बोला. "राजा को और भी कई काम होते हैं, यदि इन छिटपुट शिकायतों पर ही ध्यान देते रहेंगे तो बाकी जंगल को कौन संभालेगा तुम?" गीगी चुप रही. वह बात को और आगे नहीं बढ़ाना चाहती थी. वह शांति से अपने घर की तरफ चल दी.

"अरे जैकी, गीगी तो रोज इसी तरह हम दोनों का दिमाग खाएगी," गीगी के जाने के बाद हरि बोला, "हमें कुछ ऐसा करना पड़ेगा जिस से उस का शिकायत से ध्यान हट जाए और हमारी जान बचे."

"सही कहते हो हरि," जैकी बोला. "कुछ ऐसा करो कि वह शिकायत करना ही भूल जाए."

गीगी के फलों के बागान थे. वहां अकसर उस की दोस्त सन्नी गिलहरी और चीकू खरगोश उस से मिलने आया करते थे. हरेभरे बाग में उन्हें खेलने में बड़ा आनंद आता था. अगले दिन जब वे बाग में आए, तो देखा वह बाहर खड़ी सुबक रही थी.

"अरे गीगी, क्या हुआ? ऐसे रो क्यों रही हो?" चीकू ने पूछा.

"क्या हम ने आने में काफी देर कर दी? जो तुम यह सोच कर रोने लगी कि खेलोगी किस के साथ?" सन्नी ने माहौल हलका करने की कोशिश करते हुए पूछा.

"अब मैं क्या बताऊं," वह सुबकती हुई बोली. "मेरे बाग में किसी ने कल रात उत्पात मचाया, जिस से सब खराब हो गया. मैं ने बहुत मेहनत से बाग को लगाया था," उन्होंने देखा तो घास उजड़ी पड़ी थी. दबेकुचले फल चारों ओर फैले हुए थे. दोनों कुछ देर शांत रहे.

"तुम जैकी या हरि से बात क्यों नहीं करते? राजा अवश्य तुम्हारी बात सुनेंगे," सन्नी बोला.

"वे दोनों आज सुबह से ही गायब हैं," गीगी रोंआसा हो कर बोली, "और कल उन से मेरी थोड़ी कहासुनी भी हुई थी," गीगी ने कल वाली बात उन दोनों को बताई.

"ओह, अगर वे मुझे मिलेंगे तो मैं उन से जरूर इस बारे में बात करूंगा. कृपया तुम रोना बंद करो."

"पानी पी लो गीगी," चीकू ने कहा और अपने साथ लाए बैग से पानी की बोतल उसे पकड़ा दी. कुछ देर उसे सांत्वना देने के बाद वे दोनों भी अपने घर चले गए.

चीकू का घर घने जंगल में शेरसिंह की गुफा के निकट था. उस के पापा की मास्क की फैक्टरी थी, जो जंगल से दूर थी. वह सोचता हुआ जा रहा था कि तभी रास्ते में उसे जैकी और हरि दिख गए.

"अरे, जैकी व हरि," उस ने दोनों को आवाज लगाई.

"क्या हुआ चीकू?" जैकी बोला और दोनों उस के पास आ गए.

"किसी ने गीगी के बगीचे को बरबाद कर दिया है. उसे बहुत नुकसान हुआ है. क्या तुम अपराधी को ढूंढ़ सकते हो?" चीकू ने पूछा.

"एक समस्या का भी समाधान नहीं होता है तुम लोगों से. हर छोटी सी बात के लिए तुम राजा को परेशान करते हो और भी बहुत से काम हैं उन्हें. ये छोटेछोटे मामले हमारे पास मत लाया करो. कोशिश करो कि ऐसा दोबारा न हो, इस का तुम भी और वह भी ध्यान रखे," हरि ने कहा.

चीकू उस का मुंह देखता रह गया. दोनों फिर अपनी राह चलने लगे.

इस के बाद तो प्रतिदिन ऐसी घटनाएं सामने आने लगीं. किसी का खेत उजड़ा मिलता, तो किसी के घर के बाहर कचरा बिखरा हुआ मिलता. उन का दोष सिर्फ इतना था कि उन्होंने अपनी परेशानियां सामने रखने का प्रयास किया था, जिस का परिणाम यह हुआ. जंगलवासियों ने शिकायत करना ही छोड़ दिया. वे डर के साए में जीने लगे.

चीकू को यह सब पसंद नहीं आया. उस ने अपने पुराने न्यायप्रिय राजा टोटो को याद किया. वह सन्नी और गीगी के साथ उन से मिलने गया था.

‘‘जंगलवासी डर कर जीवन व्यतीत कर रहे थे. यदि वे शेरसिंह के खिलाफ बोलते हैं या कोई शिकायत करते हैं, तो अगले दिन उन का कुछ न कुछ नुकसान हो जाता है. अब आप ही कोई रास्ता सुझाएं,’’ चीकू ने विनती की.

‘‘हां सर,’’ सन्नी ने कहा. जैकी से सिर्फ इतना कहा था कि मेरे घर की छत से बारिश का पानी रिसता है. राजा अगर इस का कोई समाधान कर देते तो अच्छा होता. अगली सुबह मेरे घर के सामने कचरे का ढेर पड़ा हुआ था.’’

टोटो बहुत सोचविचार करने के बाद बोला, ‘‘तो इस का मतलब यह है कि जब कोई जैकी और हरि से शिकायत करता है तभी वे ऐसी हरकतों को अंजाम देते हैं और शेरसिंह अब शिकायतें सुनना ही नहीं चाहता.

‘‘इसी कारण सब ने शिकायत करना ही छोड़ दिया है,’’ चीकू बोला. ‘‘अगर वे कुछ नहीं बोलेंगे तो उन का कोई नुकसान नहीं होगा. आप जानते ही हैं कि कोविड के समय कितनी दिक्कतें हैं. ऐसे में राजा हमारी मदद नहीं करेगा तो कैसे काम चलेगा?’’

‘‘यदि कोई ऐसी तरकीब निकल जाए जिस से शिकायत का भी पता लग जाए और शिकायतकर्ता का पता न लगे,’’ टोटो ने कुछ देर सोचनेविचारने के बाद कहा, ‘‘हमें तकनीक का सहारा लेना होगा. क्या तुम्हें ट्विटर के बारे में पता है?’’ उन्होंने पूछा.

चीकू की आंखें अचानक चमकने लगीं.

‘‘मेरे फोन में ट्विटर है सर,’’ वह बोला. ‘‘और उस पर मेरा अकाउंट भी है.’’

‘‘बहुत बढ़िया,’’ तब सुनो, मेरे पास एक विचार है,’’ टोटो बोला, ‘‘उस पर लोग बिना किसी रोकटोक के अपने विचार रख सकते हैं. दूसरे भी उसे देख सकते हैं और उन का जवाब भी दे सकते हैं, तो क्यों न हम उस का इस्तेमाल अपनी परेशानियां सब के सामने रखने के लिए करें?’’ तीनों को उन का सुझाव पसंद आया.

लेकिन सभी जंगलवासियों के पास ट्विटर उपलब्ध नहीं होगा,’’ चीकू बोला, ‘‘मेरे अकाउंट का इस्तेमाल कर ट्विटर पर सब की समस्या डाल सकते हैं. इस प्रकार सब की पहचान भी सुरक्षित रहेगी.’’

‘‘अरे वाह, इस से तो जैकी और हरि को यह भी पता नहीं लग पाएगा कि किस ने शिकायत की. किसी का कोई नुकसान भी नहीं होगा,’’ सन्नी खुशी से बोला.

‘‘ बहुत बढ़िया,’’ टोटो को उस का सुझाव पसंद आया, ‘‘और याद रखें, राजा शेरसिंह को टैग करने के साथ हैशटैग बोल चीकू बोल # जोड़ें. राजा

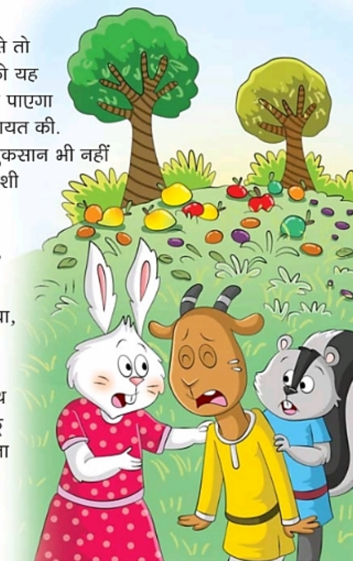

शेरसिंह को साथ में टैग करना होगा ताकि लोग गूगल पर हैशटैग डाल कर आसानी से अपनी समस्याओं तक पहुंच सकें. अब तुम तीनों काम पर लग जाओ. चीकू अपने नाम के हैशटैग से खुश हो गया था.

बस, फिर क्या था, गीगी की सहायता से सभी को इस तरकीब के बारे में बता दिया. जिन के पास ट्विटर था, उन को चीकू के अकाउंट का पासवर्ड दे दिया गया. इस हिदायत के साथ की कोई भी शिकायत के अलावा उस पर और कुछ न डाले और अपनी समस्या डालते समय हैशटैग डालना न भूलें.

जहां तक अन्य सभी का सवाल है, गीगी ने उन से अपनी समस्याओं को कागज के टुकड़े पर लिखने को कहा. चीकू ने उन्हें संक्षेप में ट्विटर पर लिखना शुरू कर दिया.

''मेरे दादाजी को अस्पताल में बेड की जरूरत है, यदि कोई कुछ मदद कर सके तो हम से संपर्क करें #चंपकवन#बोल चीकू बोल# राजा शेरसिंह.''

''मैं अपना कोविड टेस्ट जल्दी करवाना चाहता हूं, ताकि अपना इलाज समय पर करवा सकूं. मुझ से संपर्क करें #चंपकवन#बोल चीकू बोल# राजा शेरसिंह.''

इसी प्रकार बाकी जानवर भी शिकायतें भेजने लगे. धीरेधीरे ट्विटर पर # सब से ज्यादा प्रयोग किया जाने वाला हैशटैग बन गया. आसपास के वनों में भी इस की चर्चा होने लगी. बहुत समय तक किसी को नुकसान नहीं हुआ था. जैकी और हरि किसी को ढूंढ़ ही नहीं पाए थे, पर राजा शेरसिंह की बदहाली की चर्चा औनलाइन होती थी.

वहीं कोई शिकायत नहीं आने कारण जैकी और हरि शेरसिंह की गुफा के बाहर ही आराम करते थे. तभी एक दिन शेरसिंह दहाड़ता हुआ अपनी गुफा से बाहर आया.

''यह सब क्या हो रहा है,'' जैकी और हरि गहरी नींद में थे. शेरसिंह के दहाड़ते ही दोनों एकदम उठे.

''जी महाराज, क्या हुआ?'' हरि बोला.

शेरसिंह ने अपना फोन उन दोनों के सामने रख दिया. उस पर ट्विटर खुला हुआ था.

''देखो, अपनी आंखों से,'' वह बोला. ''उन सभी जंगलवासियों ने अपनी शिकायतें ट्विटर पर डालनी शुरू कर दी हैं. # ट्विटर पर सब से ऊपर चल रहा है. हमारी बहुत बदनामी हो रही है.''

दोनों एकदूसरे की शक्ल देखने लगे.

''महाराज, हमारे पास तो ट्विटर है नहीं. हमें पता ही नहीं चला ऐसा हो चुका है,'' जैकी बोला.

''आखिर यह सब किस ने किया? सब को आज शाम इकट्ठा करो, मैं उन से सवाल पूछूंगा,'' शेरसिंह बोला.

''क्या इस तमाशे का कारण कोई बताएगा?'' शेरसिंह गुस्से में बोला. उस ने अपना फोन उन के सामने हवा में लहराया.

''यह सब मेरा ही आइडिया था,'' वह बोला. ''पर गुस्सा करने से पहले हमारी बात भी सुनिए,'' शेरसिंह शांत रहा.

''आप के ये दो सलाहकार जैकी और हरि जिन को आप ने जंगलवासियों की भलाई के लिए काम पर लगाया है. उन्होंने पूरे जंगल में गुंडागर्दी फैलाई है. उन्होंने हमारी आवाज को दबाने की कोई कसर नहीं छोड़ी है,'' चीकू बोला.

शेरसिंह ने तीखी नजरों से चीकू को देखा.

''यह मेरी दोस्त गीगी है. इस बेचारी का बगीचा सिर्फ इसीलिए उजाड़ दिया गया, क्योंकि उस ने कहा था कि जल्दी से उसे अपना कोविड टेस्ट करवाना है. टुनटुन मौसी के घर की दीवारों पर गोबर सिर्फ इसीलिए पोत दिया गया, क्योंकि वह सिर्फ कोविड टीकों की कमी की शिकायत कर रही थी,'' चीकू बोला. सब ने हामी में अपने सिर हिला दिए.

''इन लोगों ने तो कुछ भी बोलना ही छोड़ दिया. फिर मैं ने और चीकू ने अपनी बात आप तक पहुंचाने के लिए यह हथकंडा अपनाया,'' टोटो ने कहा, ''किसी भी राजा की सब से बड़ी ताकत उस की प्रजा होती है और वह तभी सुखी रह सकती है जब उसे अपनी बात कहने का मौका मिले, उसे दबाया न जाए.''

''बहुत खूब,'' शेरसिंह बोला, ''मैं ने इतने प्रयास किए. आप की हर शिकायत का समाधान किया पर आप हैं कि सिर पर चढ़े ही जा रहे हैं. आप की हर छोटीछोटी समस्याओं को हल करने का मेरे पास समय नहीं,'' सब शांति से सुन रहे थे.

''पर महाराज, यह आप का काम है,'' अब चीकू बोला. ''हम समझ सकते हैं कि आप के पास बहुत जिम्मेदारियां हैं, पर इस मुश्किल समय में हम अपनी समस्याएं आप को नहीं तो और किसे बताएंगे? आप को हम ने इसीलिए चुना है क्योंकि हम ने आप को इस योग्य समझा कि आप समझदारी से सब की बात सुनेंगे. अगर हम समस्या को खुद ही सुलझा पाते तो आप की आवश्यकता ही क्या थी?''

''बस,'' शेरसिंह आगबूला हो गया, ''मुझे पता है यह सब टोटो की करतूत है और तुम उस के साथ मिले हुए हो. अगर तुम अपनी गद्दी वापस पाने के लिए उतावले हो, तो दोबारा चुनाव क्यों नहीं करवा लेते?''

खुशी के साथ टोटो मुसकराया, अब दोबारा चुनाव होंगे.

''लेकिन महाराज, एक बार फिर सोच लीजिए,'' जैकी बोला.

''नहीं, अब तो चुनाव हो कर ही रहेंगे,'' शेरसिंह भड़क गया. जैकी और हरि ने अपना सिर पीट लिया.

और आखिरकार दोबारा चुनाव हुए, शेरसिंह बुरी तरह हार गया. टोटो को भारी बहुमत के साथ वापस राजा बनाया गया और उन्होंने चीकू को अपना मुख्य सलाहकार नियुक्त कर लिया. चंपकवन में अब से वह दिन 'बोलने की आजादी' मिलने की खुशी में मनाया जाने लगा.

ट्विटर और हैशटैग 'बोल चीकू बोल' का उपयोग करना जारी रखा. चंपकवन के साथसाथ उस के कई पड़ोसी जंगलों के निवासियों ने भी इसी तकनीक का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया. ●

चित्र पूरा करें

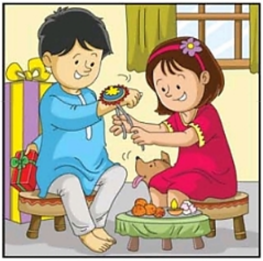

इस चित्र में कुछ हिस्से खाली रह गए हैं. चित्र को देखें, उन्हें पूरा करें और फिर इन में रंग भरें.

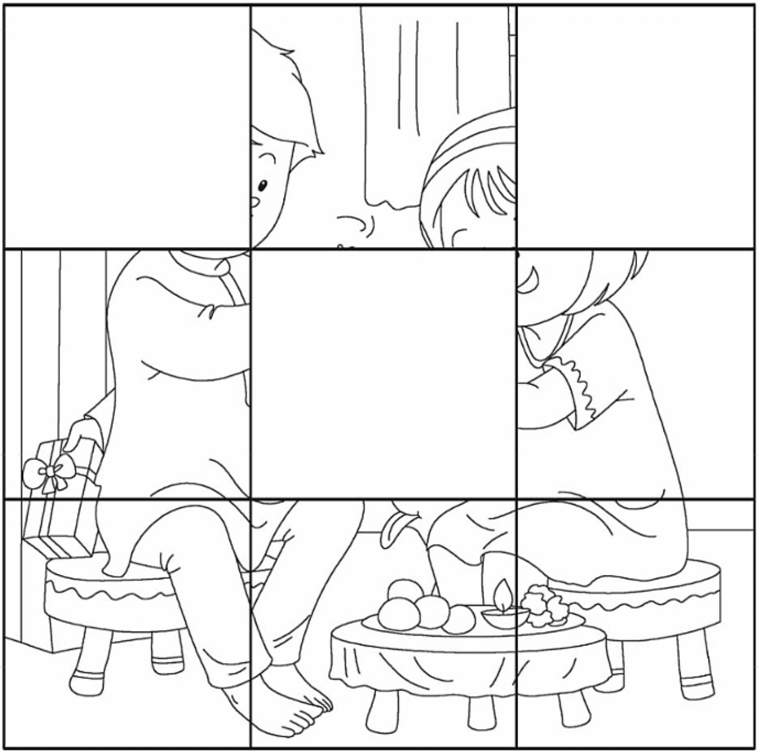

आप के सवाल मेनका आंटी के जवाब

मेनका आंटी पशुपक्षियों से बहुत प्यार करती हैं. अब आप के सवालों का जवाब मेनका आंटी देंगी. जैसे चिड़िया व जानवरों को खाना कैसे खिलाएं, उन्हें कैसे प्यार करें, उन की कैसे देखभाल करें आदि. वे एक सांसद तो हैं ही, कुशल पर्यावरणविद् भी हैं.

जानवर हमारे ग्रह के निवासी हैं, जैसे कि हम मनुष्य हैं. जब हम उन्हें मार कर नहीं खा रहे हैं या उन के अंगों का इस्तेमाल कर के उन का सम्मान करते हैं, हम अपने ग्रह और प्रकृति के प्रति अपना सम्मान दर्शाते हैं. जिन पशुओं और जानवरों को हम पालतू जानवर के रूप में रखते हैं, वे पूरी तरह हम पर निर्भर होते हैं और उन्हें अवश्य ही प्यार किया जाना चाहिए तथा उन का सम्मान किया जाना चाहिए जैसे कि हम अपने भाईबहनों का करते हैं. पक्षियों और मछलियों को पालतू जानवर के रूप में न रखें, उन्हें पिंजरे में कैद कर देना और दयनीय बनाना अच्छा नहीं है.

मेनका संजय गांधी

मैं पशुओं को गोद लेने के एक केंद्र में गया और एक पिल्ला जिस के सिर्फ तीन पैर थे, को गोद लेना चाहा, लेकिन ऐसा कर न सका क्योंकि मेरी मम्मी ने मुझे कहा कि इस की देखभाल करना मुश्किल होगा. मैं इस तरह के पिल्ले की देखभाल कैसे कर सकता हूं?

कनक मेहरा, 10 वर्ष
गुरुग्राम

तीन टांगों वाले कुत्ते की देखभाल करना कैसे मुश्किल हो सकता? क्या एक हाथ या एक पैर वाले मनुष्य की देखभाल करना मुश्किल काम होगा? वास्तव में पिल्ला आप को रहने के लिए घर देने की एवज में बहुत ज्यादा प्यार करेगा. एक विकलांग जीव की देखभाल करना सब से अद्भुत काम है, जिसे आप कर सकते हैं.

पक्षी कैसे उड़ते हैं, जब बारिश होती है?

भैरवी पारेख, 7 वर्ष, अहमदाबाद

अधिकांश पक्षी उड़ते नहीं हैं. वे बैठ जाते हैं और आश्रम की तलाश करते हैं, हल्की सी बारिश के दौरान उड़ते हैं. वे अपने जलरोधक पंखों के साथ शुष्क यानी सूखा बने रहते हैं जो एक अच्छे रैनकोट की तरह कार्य करते हैं. अगर बारिश बहुत तेज हो या तेज हवा के साथ हो रही हो, तो ये पक्षी हिलते नहीं हैं. जब हवा तेज होती है, तो पंख उस के खिलाफ धक्का देते हैं और पक्षी को वह लिफ्ट यानी ऊंचाई देते हैं, जिस की उन्हें आवश्यकता होती है. बारिश और उच्च आर्द्रता हवा में काफी सारे पानी के अणुओं को जोड़ती है. ये पानी के अणु हवा में जगह घेरते हैं जिस से हवा का घनापन कम हो जाता है. ऐसे में इन पक्षियों का उड़ना मुश्किल हो जाता है.

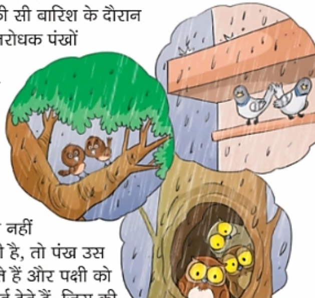

यदि आप पालतू जानवरों, पशुपक्षियों के बारे में कुछ भी पूछना चाहें, तो अपने प्रश्न हमें भेजें, मेनका आंटी हर प्रश्न का जवाब देंगी.

✉ **writetochampak@delhipress.in**

☎ **8657402248**

ट्राइकलर बैज

पूजा नंदनवार

स्मार्ट

आइए, स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त के लिए हम चार्टपेपर का इस्तेमाल करते हुए बैज यानी बिल्ला बनाते हैं.

आप को चाहिए : औरेंज, सफेद और हरा चार्टपेपर, पैंसिल, कैंची, ग्लू, नीला स्कैच पैन, सैफ्टिपिन.

ऐसे बनाएं :

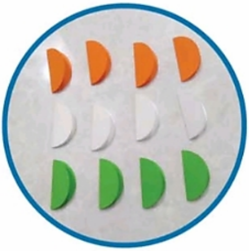

1. औरेंज, सफेद और हरा, सभी चार्ट पेपर से 4 वृत्त काट लें. उन्हें आधा मोड़ दें.

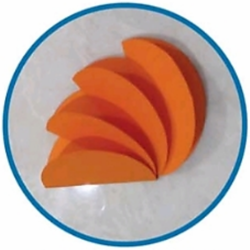

2. जैसा कि चित्र में दिखाया गया है, मोड़े हुए औरेंज वृत्त की तह लगाएं और उन्हें एकसाथ ग्लू लगा कर चिपका दें.

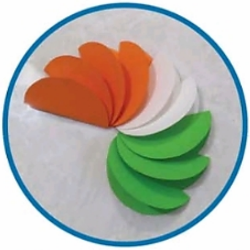

3. ठीक इसी तरह से 2 सफेद और 4 हरे मोड़े हुए वृत्त को ग्लू लगा कर चिपकाएं जैसा कि यहां दिखाया गया है.

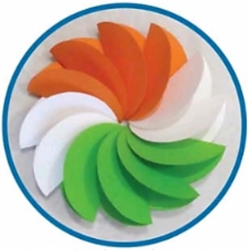

4. अब बाकी बचे 2 सफेद वृत्त जोकि मोड़े हुए हैं, ग्लू लगा कर चित्र के अनुसार पूर्ण कर लें.

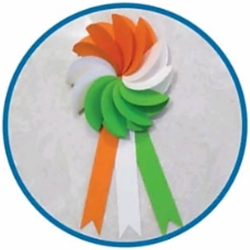

5. इन्हीं रंगों की पटि्टयां काट लें और इन्हें बैच यानी बिल्ले के पीछे ग्लू से चिपका दें.

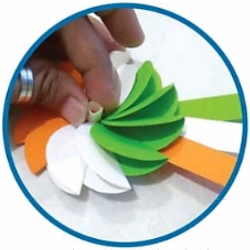

6. एक पेपर के टुकड़े को रोल करें और इसे बीच के अशोक चक्र को सपोर्ट देने के लिए ग्लू से चिपका दें.

7. नीले स्कैच पैन का उपयोग करते हुए चक्र को डिजाइन कर लें और इसे ग्लू लगा कर चिपका दें.

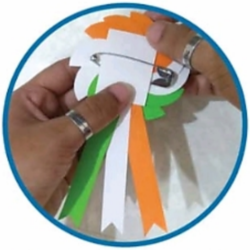

8. पेपर के एक टुकड़े का इस्तेमाल करते हुए पीछे की तरफ एक सैफ्टिपिन को ग्लू लगा कर चिपका दें जैसा चित्र में दिखाया गया है.

अब आप का ट्राइकलर बैज यानी तिरंगा बिल्ला बन कर तैयार है.

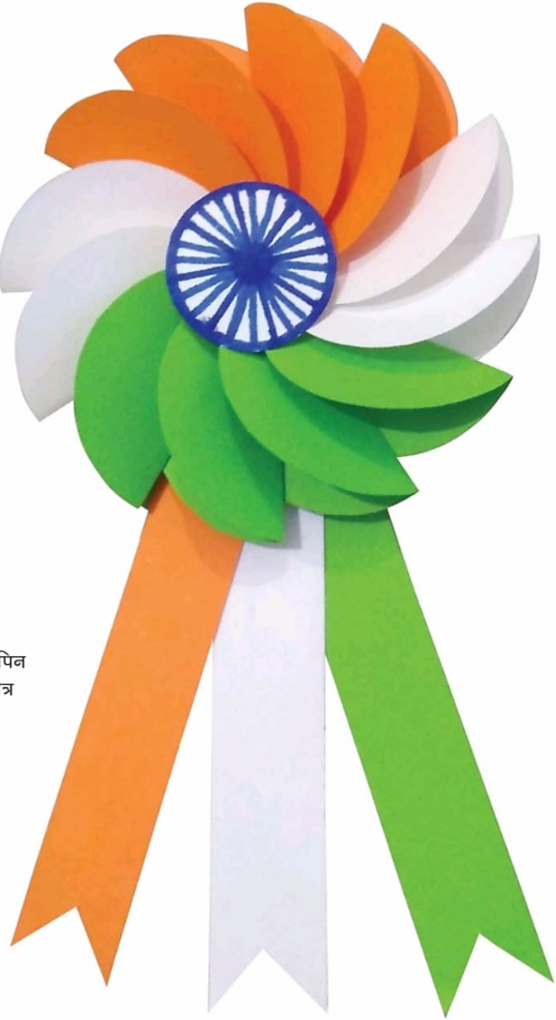

अपने घर पर इसे स्वयं ही बनाने की कोशिश करें. हमें अपनी प्रविष्टि writetochampak@delhipress.in या एक फोटो खींच कर +91 8657402248 पर भेज दें.

जिहान, अयान और मच्छर

कहानी ● मल्लिका सुकुमार

''अरे, मेरा मौस्किटो रैकेट कहां है?'' जिहान अपने बिस्तर से उठा और रैकेट लेने दौड़ा. वह रैकेट ले कर डौस्की काले मच्छर की तलाश में वापस आया और छिप गया था. जिहान बैठ गया. वह थक गया था लेकिन उस ने हौसला नहीं छोड़ा. वह कुर्सी पर बैठ गया और देखने लगा. उस की आंखें कमरे में चारों तरफ उस शैतान मच्छर को ढूंढ़ रही थी.

उस का भाई अयान हमेशा की तरह रात को उठ कर मच्छरों पर शोध कर रहा था. उसे ऐसा करना पसंद था. वह इस तरह के काम में लग जाता था और 'कैसे और क्यों' जैसे परेशान करने वाले प्रश्नों के उत्तर खोजने में लगा रहता था. वह हमेशा नई जानकारी चाहता था.

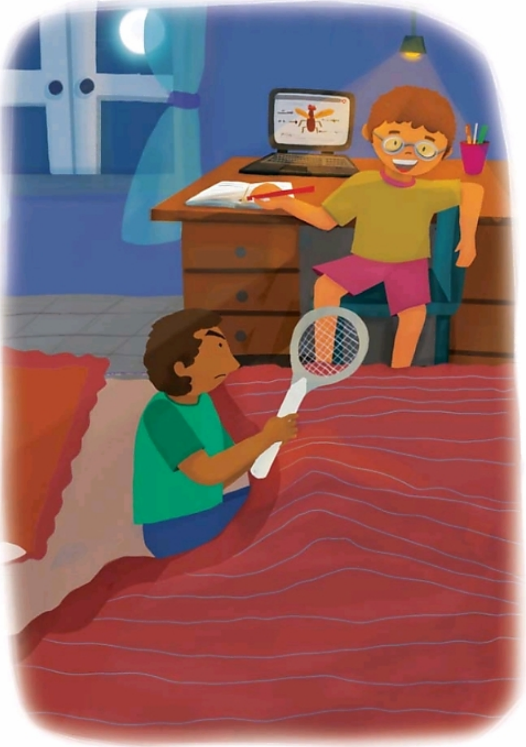

जिहान ने कहा, ''मुझे हैरानी है कि मच्छर मेरे पीछे लगे रहते हैं. तुम जागे रहते हो तो यह तुम्हें छूते भी नहीं हैं.''

अयान ने अपना चश्मा ठीक किया और मजाक में कहा, ''शायद तुम इन्हें कुछ ज्यादा ही दिलचस्प लगते होंगे.''

डौस्की और उस का दोस्त मौस्की मच्छर उन की बातचीत सुन रहे थे. मौस्की ने डौस्की से पूछा, ''हां, हम अयान को क्यों नहीं काटते हैं?''

डौस्की ने मौस्की से कहा, ''कम से कम अयान हमारे बारे में पढ़ने और शोध करने में लगा तो रहता है. यही कारण है कि हमें उसे नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते. लेकिन यह जिहान हमेशा बड़ा सा मौस्किटो रैकेट उठा लेता है और हमें मारने की कोशिश करता है, हमें नुकसान पहुंचाता है.''

मौस्की ने गुस्से से कहा, ''हमें तब तो जिहान को जरूर काटना चाहिए,'' तभी उस के मन में दूसरा विचार आया, ''हम क्यों न किसी सुरक्षित स्थान पर चले जाते हैं? हमें अपनी जान जोखिम में डाल कर इन इंसानों को काटने की जरूरत क्यों होती है? चलो, हम फूलों के रस यानी नेक्टर को चूसते हैं जो हमारा सामान्य भोजन है.''

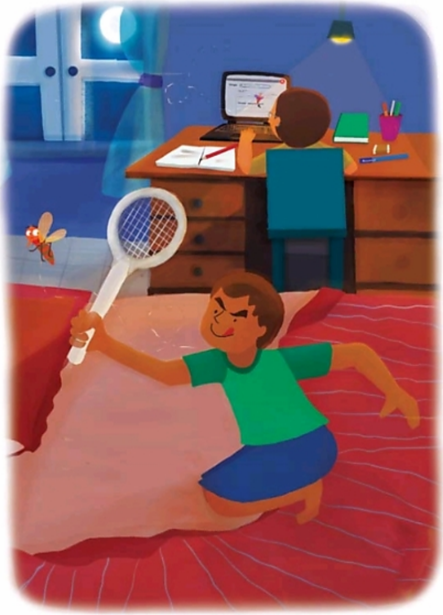

डौस्की ने कहा, ''कायरों की तरह मरने से अच्छा है कि हम लड़ते हुए मरें. हमारे बापदादा, हमारे सभी पूर्वज सदियों से इंसानों को काटते रहे हैं फिर हमें इन्हें काटना क्यों छोड़ देना चाहिए?''

मौस्की बोला, ''हम्म, हमें मादा मच्छरों को उन्हें काटने का मौका देना चाहिए, क्योंकि अंडे देने के लिए उन्हें प्रोटीन की जरूरत होती है. यह उन की जरूरत है, लेकिन हम नर मच्छरों के लिए इस की जरूरत नहीं है. क्या हमें अपने जीवन में कुछ सार्थक काम नहीं करना चाहिए, जो इस से अलग हो?''

मौस्की के दिमाग में एक आइडिया आया. उस ने कहा, ''मैं अयान की खुद पर शोध करने में मदद करूंगा.''

डौस्की ने पूछा, ''तुम ऐसा कैसे करोगे? अगर तुम उस के निकट गए तो जिहान अपने मच्छर मारने वाले रैकेट के साथ हमेशा तुम्हें तैयार दिखाई देगा.''

मौस्की ने कहा, ''मैं एक वैबसाइट के बारे में जानता हूं जो हम पर उस की शोध में बहुत ज्यादा सहायक होगा. अयान ने अभी तक इस को देखा नहीं है. मेरे पास एक आइडिया है, तुम जिहान को अपने पीछे उलझाए रखना ताकि वह तुम्हारे चारों ओर अपना रैकेट लहराता रहे. मैं किसी तरह उस वैबसाइट पर अयान को ले जाने की कोशिश करूंगा.''

डौस्की बोला, ''बहुत बढ़िया, तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि अगर मैं मारा गया तो तुम्हें इस की कोई परवाह नहीं होगी.''

मौस्की ने कहा, ''मैं ने सोचा था कि तुम बहुत बहादुर हो. खैर, वह हमारे पूर्वज ही थे जिन्होंने वैज्ञानिकों को बताया था कि मादा मच्छर ही हैं जो मनुष्यों में मलेरिया फैलाते हैं. अयान को इस जानकारी के बारे में अभी तक कोई ज्ञान नहीं है. यह जानकारी उस के शोध में उस के लिए एक बहुत बड़ी सफलता होगी.''

डौस्की अब राजी हो गया, ''तुम सही कह रहे हो.

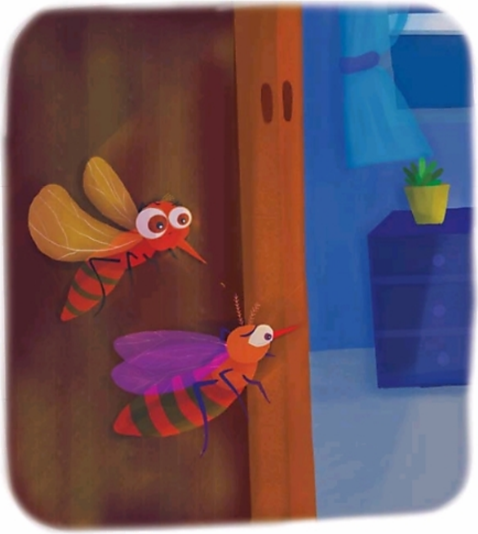

यही कारण है कि हम मच्छरों के लिए भी एक दिन निर्धारित है. 20 अगस्त को विश्व मच्छर दिवस मनाया जाता है. ओके, ठीक है. अब जैसा तुम कहोगे, मैं वैसा ही करूंगा.''

मौस्की ने कहा, ''मेरा काम जब समाप्त हो जाएगा, तो उस के बाद हम उस अलमारी के किनारे पर मिलेंगे. यह एक सुरक्षित जगह है,'' उस के बाद जिहान को देखते हुए जो चारपाई पर बैठा अभी भी हाथ में रैकेट पकड़े हुए था, मौस्की ने कहा, ''इस तरह के संकरे स्थान जिहान के रैकेट मारने से हमारे लिए सुरक्षित हैं.''

उस रात जब अयान अपने लैपटौप पर काम करते शोध करने में लगा था तो मौस्की तुरंत अयान की कुर्सी पर बैठ गया. डौस्की जिहान के पास उड़ता रहा और सावधानी से उसे परेशान करने लगा. जिहान यहांवहां कूदता रहा और चिढ़ कर अपना रैकेट उस के चारों ओर घुमाता रहा.

जब अयान अपने लैपटौप पर अलगअलग वैबसाइट को ढूंढ़ने लगा तब मौस्की उड़ा और स्क्रीन के उस बिंदु पर जा कर बैठ गया जो पेज नंबर 7 को दर्शाता था. अयान ने अनजाने में ही पेज नंबर 7 पर क्लिक कर दिया और मौस्की उड़ा और उस पेज के एक लिंक पर जा कर बैठ गया. अयान ने फिर उस लिंक पर क्लिक कर दिया और जिहान को बताया, ''तुम क्या कर रहे हो? एक मच्छर मुझे यहां तंग कर रहा है और तुम कहीं और देख रहे हो.''

अयान के आरोप के जवाब में मानो मौस्की ने अयान को धीरे से काटा और अलमारी के किनारे की ओर उड़ कर चला गया. डौस्की यहां उस से मिला. मौस्की ने उसे बताया, ''मैं अयान की मदद कर रहा था और उस ने जिहान से कहा कि मैं उसे तंग कर रहा था, इसलिए मैं ने उसे काट लिया.''

डौस्की बोला, ''तुम ने उस की सही सेवा की,'' फिर मौस्की को शांत करने के लिए उस ने कहना जारी रखा, ''वैसे भी अयान को यह पता नहीं कि तुम सिर्फ उस की मदद करने की कोशिश कर रहे थे. इंसान हमें सिर्फ मच्छर समझते हैं, परेशानी उत्पन्न करने वाला. क्या वह उस साइट पर गया था जिसे तुम चाहते थे कि वह देखे?''

मौस्की ने कहा, ''जरा ठहरो, मुझे एक नजर डालनी है. सब से पहले देखो कि क्या वहां जाना सुरक्षित है?''

मौस्की ने अलमारी के किनारे से झांक कर देखा. जिहान गुस्से से भरी देख रहा था और अपना रैकेट ऊपर उठाए तैयार था.

मौस्की ने कहा, ''अरे, इस जिहान का क्या करें. किसी को चाहिए कि रैकेट के साथ उस की एक फोटो खींच ले. वह बिलकुल मजाकिया लग रहा है.''

डौस्की और मौस्की एकसाथ हंसने लगे. डौस्की को एक आइडिया सूझा और उस ने कहा, ''चलो, हम

जिहान के साथ खेलते हैं. मैं उस के सामने से उडूंगा और उसे परेशान करने की कोशिश करूंगा और तुम भी बिलकुल ऐसा ही पीछे से करना.''

मौस्की तैयार हो गया. डौस्की जिहान के सामने उड़ कर गया तो वह अपने रैकेट को लहराने लगा. डौस्की बतख की तरह चलते हुए चारपाई के नीचे जा कर छिप गया.

अयान चीखने लगा, ''जिहान, क्या बढ़िया साइट है जिसे मैं उस मच्छर की वजह से ढूंढ़ सका. इस में वे सभी शोध, आर्टिकल्स और जानकारियां हैं, जिन की मुझे जरूरत है,'' जैसे ही जिहान ने अपना रैकेट उठाया, अयान दौड़ता हुआ आया और रैकेट पकड़ लिया. अयान ने कहा, ''उन्हें मत मारो. हम उन की खिड़की से बाहर उड़ने में मदद करेंगे.''

जिहान ने अयान को हैरानी से देखा. अयान ने खिड़की खोली और बोला, ''अरे, नन्हें मच्छरो, इस से पहले कि तुम जिहान के रैकेट से मार दिए जाओ, कृपया जल्दी से खिड़की से बाहर भाग जाओ. खुद को बचाओ, नई जिंदगी तुम्हारा इंतजार कर रही है.''

मौस्की और डौस्की ने महसूस किया कि यह अभी या कभी नहीं का निर्णय करने का समय था. वे छिपे हुए स्थान से बाहर निकल आए और खिड़की से बाहर उड़ गए. मौस्की ने डौस्की से कहा, ''चलो, अब हम फार्म फील्ड यानी खेत के मैदान में चलते हैं. मैं वैसे भी शहरी जीवन से थक गया हूं.''

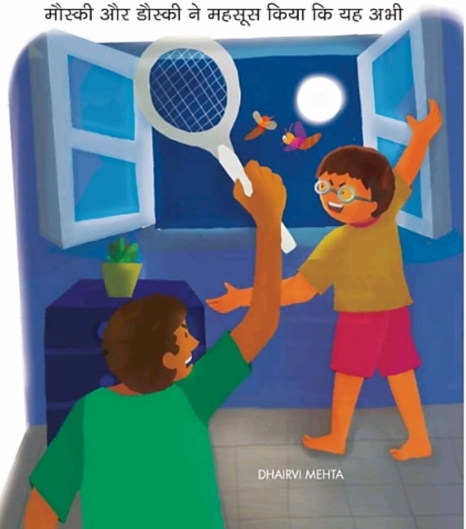
DHAIRVI MEHTA

जिहान हैरानी से मच्छरों को बाहर जाते हुए देखता रहा. फिर उस ने अयान को देखा और आश्चर्य से कहा, ''वे तुम्हें समझ गए.''

अयान हंसा और बोला, ''वे बस प्रकाश में चले गए हैं.'' ●

बारिश और पानी के पोखरों में बहुत सारे मच्छर पैदा होते हैं. इन के काटने से डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया जैसी बीमारियां होती हैं. यहां बताया गया है कि कैसे आप अपने घरों और उस के आसपास मच्छरों को पनपने से रोक सकते हैं.

● **ठहरे हुए पानी को हटाएं** : ठहरे हुए पानी में अंडे दे कर मच्छर पनपते हैं. अगर आप ठहरे हुए पानी को देखते हैं तो इसे साफ कर दें या ढक दें.

● **कूड़ेकचरे को साफ करें** : अपने घर के चारों ओर खास कर बागबगीचे, कंपाउंड्स या अहाते में किसी भी तरह के कचरे को जमा न होने दें. ये मच्छरों के छिपने के स्थान बन जाते हैं. अपने घर से नियमित रूप से कचरे को हटाते रहें. यदि आसपास गंदगी काफी दिन से पड़ी है तो उस से तुरंत छुटकारा पाएं.

● **भौतिक अवरोधों का उपयोग करें** : जैसे ही शाम ढलती है, आप देखते हैं कि मच्छर आप के घर की ओर आ रहे होते हैं. इस दौरान दरवाजे और खिड़कियों को बंद रखें.

दादाजी और रक्षाबंधन

कहानी ● विवेक चक्रवर्ती

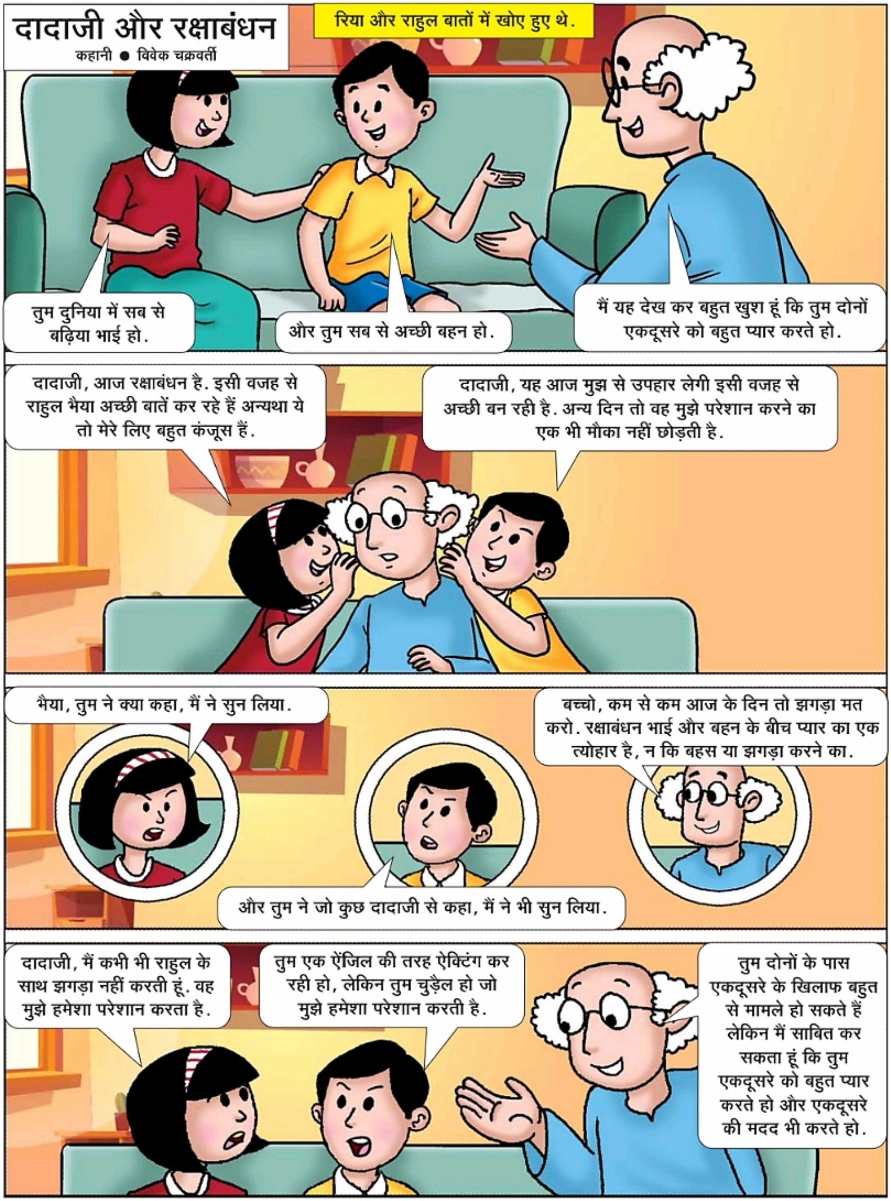
रिया और राहुल बातों में खोए हुए थे.
तुम दुनिया में सब से बढ़िया भाई हो.
और तुम सब से अच्छी बहन हो.
मैं यह देख कर बहुत खुश हूं कि तुम दोनों एकदूसरे को बहुत प्यार करते हो.
दादाजी, आज रक्षाबंधन है. इसी वजह से राहुल भैया अच्छी बातें कर रहे हैं अन्यथा ये तो मेरे लिए बहुत कंजूस हैं.
दादाजी, यह आज मुझ से उपहार लेगी इसी वजह से अच्छी बन रही है. अन्य दिन तो वह मुझे परेशान करने का एक भी मौका नहीं छोड़ती है.
भैया, तुम ने क्या कहा, मैं ने सुन लिया.
और तुम ने जो कुछ दादाजी से कहा, मैं ने भी सुन लिया.
बच्चो, कम से कम आज के दिन तो झगड़ा मत करो. रक्षाबंधन भाई और बहन के बीच प्यार का एक त्योहार है, न कि बहस या झगड़ा करने का.
दादाजी, मैं कभी भी राहुल के साथ झगड़ा नहीं करती हूं. वह मुझे हमेशा परेशान करता है.
तुम एक ऐंजिल की तरह ऐक्टिंग कर रही हो, लेकिन तुम चुड़ैल हो जो मुझे हमेशा परेशान करती है.
तुम दोनों के पास एकदूसरे के खिलाफ बहुत से मामले हो सकते हैं लेकिन मैं साबित कर सकता हूं कि तुम एकदूसरे को बहुत प्यार करते हो और एकदूसरे की मदद भी करते हो.

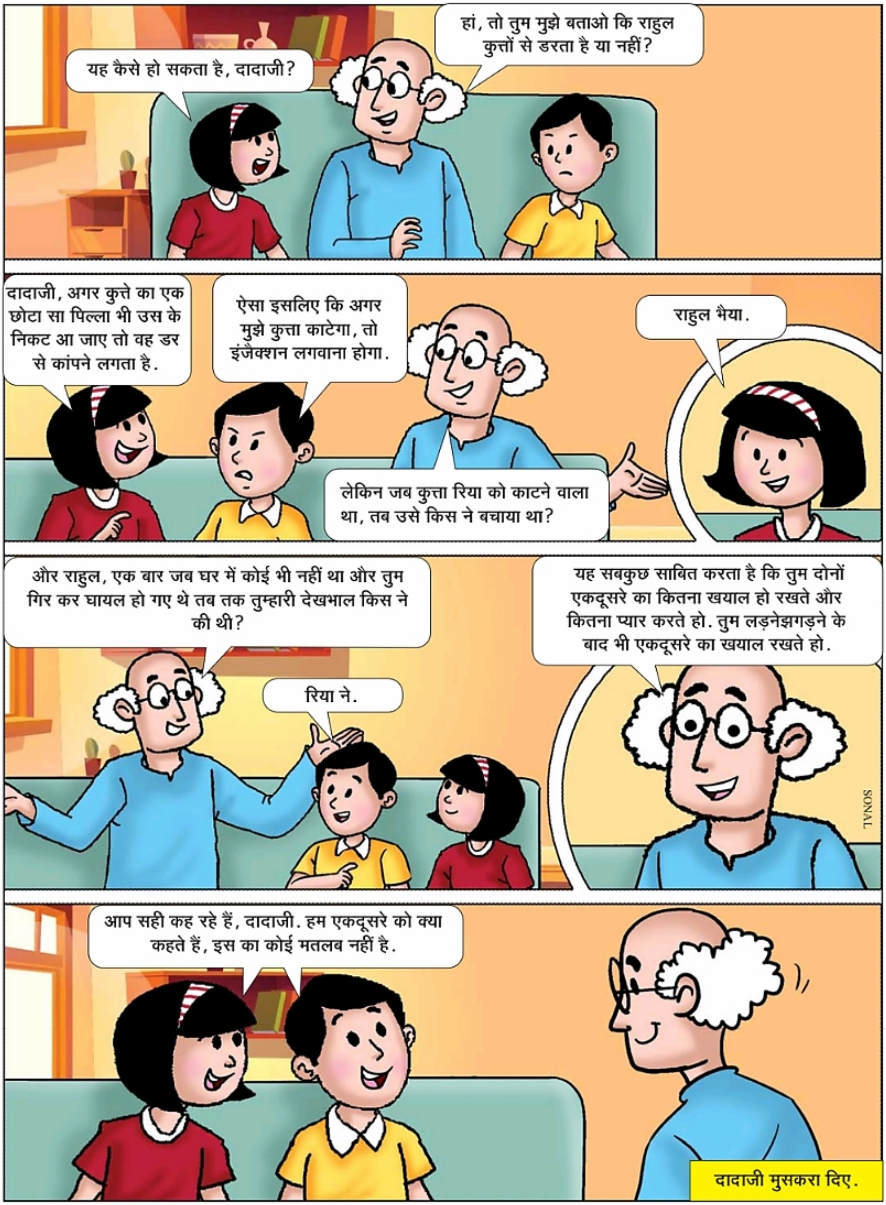
यह कैसे हो सकता है, दादाजी?
हां, तो तुम मुझे बताओ कि राहुल कुत्तों से डरता है या नहीं?
दादाजी, अगर कुत्ते का एक छोटा सा पिल्ला भी उस के निकट आ जाए तो वह डर से कांपने लगता है.
ऐसा इसलिए कि अगर मुझे कुत्ता काटेगा, तो इंजैक्शन लगवाना होगा.
लेकिन जब कुत्ता रिया को काटने वाला था, तब उसे किस ने बचाया था?
राहुल भैया.
और राहुल, एक बार जब घर में कोई भी नहीं था और तुम गिर कर घायल हो गए थे तब तक तुम्हारी देखभाल किस ने की थी?
रिया ने.
यह सबकुछ साबित करता है कि तुम दोनों एकदूसरे का कितना खयाल हो रखते और कितना प्यार करते हो. तुम लड़नेझगड़ने के बाद भी एकदूसरे का खयाल रखते हो.
SONAL
आप सही कह रहे हैं, दादाजी. हम एकदूसरे को क्या कहते हैं, इस का कोई मतलब नहीं है.
दादाजी मुसकरा दिए.

अंतर बताओ

यहां 10 गलतियां हैं. आप उन गलतियों को ढूंढ़ कर बताएं.

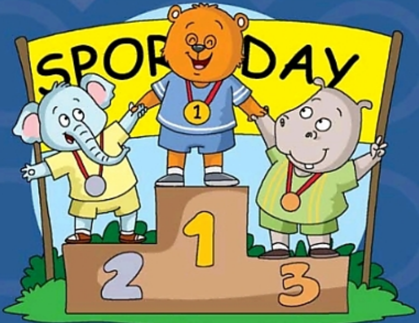

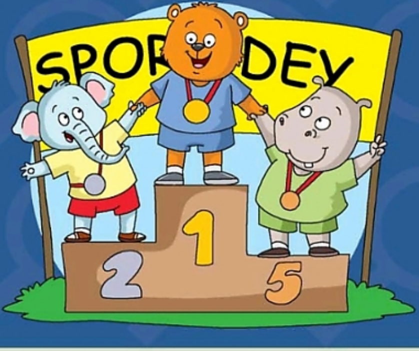

हमारा और उन का मस्तिष्क

मनुष्य का मस्तिष्क हजारों स्नायु कोशिकाओं से बना है जिन का काम जानकारी प्राप्त करना और हमारी मांसपेशियों को निर्देश भेजना है. वे इस के लिए जिम्मेदार हैं. ये कोशिकाएं मस्तिष्क से सूचनाओं को प्राप्त कर शरीर के बाकी हिस्से में पहुंचाती हैं.

ज्यादा से ज्यादा कीड़ेमकोड़े जैसे फ्रूट फ्लाई यानी फलों वाली मक्खियों और कीड़ों का मस्तिष्क भी इसी तरह से काम करता है. हम में और इन में सिर्फ एक ही फर्क है और वह है, इन की एक मिलियन स्नायु कोशिकाएं होती हैं.

हमारी तरह ही ये कीड़ेमकोड़े भी निर्णय लेने में अपने मस्तिष्क का इस्तेमाल करते हैं और अपने व्यवहार को सुचारु रूप से नियंत्रित करते हैं. शोध करने वाले वैज्ञानिकों ने पता लगाया कि किस तरह से मनुष्य मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं जैसे कि मनोभ्रम पार्किंसंस रोग और स्मरणशक्ति कम होने को झेलते हैं, फल मक्खियां भी इसी तरह की समस्याओं को झेलती हैं.

इस के अतिरिक्त मनुष्य का मस्तिष्क जन्म के बाद पूरी तरह विकसित होता है. लेकिन अधिकांश कीड़ेमकोड़ों दिमाग अभी भी विकसित होता रहता है भले ही वे लार्वा अवस्था में ही क्यों न हों. वे इस का इस्तेमाल वातावरण को समझने में करने के लिए समर्थ होते हैं. फल मक्खी हालांकि मनुष्य के समान होती है, जहां उन का दिमाग वयस्क होने पर भी विकसित होता है.

फल मक्खियां वास्तव में फल नहीं खाती हैं, वे अधिक पक चुके फलों की ओर आकर्षित होती हैं, लेकिन वे जो कुछ खाती हैं, वह फंगस या सड़ांध होता है, जो फल पर या उस के अंदर पैदा होता है.

स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त को मनाया जाता है.

गलत को बताएं

इस चित्र में कुछ बातें ऐसी हैं जो सही नहीं हैं, उन्हें ढूंढ़ें.

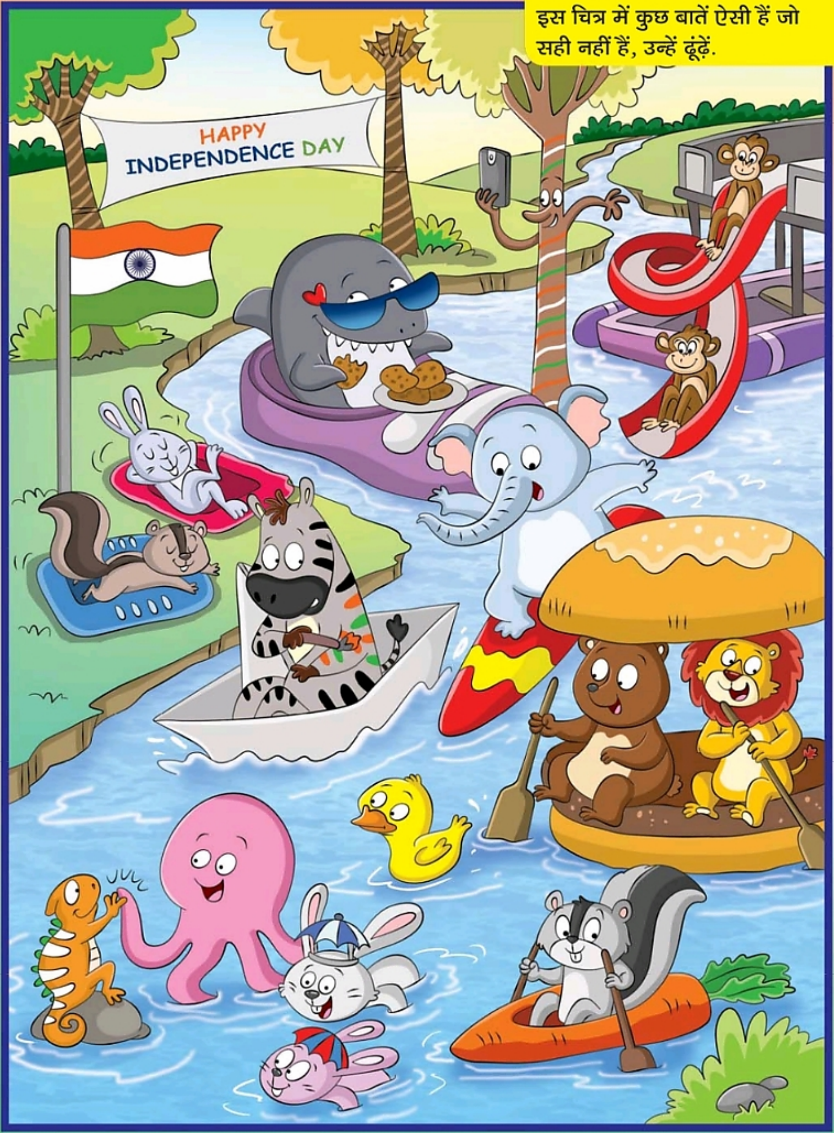
HAPPY
INDEPENDENCE DAY

मिंकी की पायल

कहानी ● आशा शर्मा

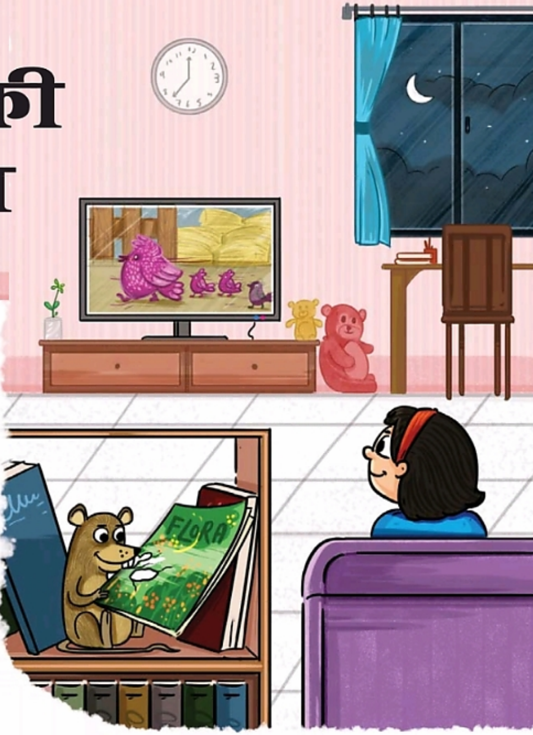

एक बार की बात है, शहर में एक धनी व्यापारी रहता था. वह अनाज का व्यापार करता था. शहर के लोग उसे धन्ना सेठ कहते थे. छिटकू नाम का एक चूहा उन के गोदाम में अपने कुछ दोस्तों के साथ रहता था. वे गोदाम में रखी अनाज की बोरियों में छेद कर आराम से अनाज चुराते और वहीं अपने बिलों में घुस कर सो जाते थे. वे बड़े आराम से जीवन जी रहे थे.

इन में छिटकू कुछ ज्यादा ही नटखट और शरारती था. कभीकभी वह दीवार से सटी पाइपलाइन के सहारे ऊपर चढ़ कर सेठ के घर में भी पहुंच जाता था. सेठ की पोती चिनिया का बेडरूम उसे बहुत अच्छा लगता था. वह जब चिनिया के बेडरूम में गया तो तब वह टीवी पर कार्टून देख रही थी. छिटकू भी सोफे के पीछे छिप कर टीवी देखता.

एक दिन उस ने देखा कि चिनिया के कमरे में कई रंगबिरंगी किताबें रखी हैं. रात को छिटकू धीरे से उन के पास गया और सूंघने लगा. ‘वाह, इन में से कितनी अच्छी सुगंध आ रही है. शायद कोई स्वादिष्ठ चीज है,’ सोचते हुए छिटकू ने जरा सा चख कर देखा तो मजा आ गया. रात भर उस ने सारी किताबें कुतर डालीं.

सुबह जब चिनिया उठी और उस ने अपनी किताबों का हाल देखा तो वह जोर से रोने लगी. सेठ को चूहों पर बहुत गुस्सा आया. उस ने चिनिया को नई किताबें ला कर दीं और दूसरे ही दिन मिंकी बिल्ली को ला कर अपने गोदाम में छोड़ दिया.

इतने सारे चूहों को एकसाथ देख कर मिंकी खुशी से नाचने लगी. उस ने अपनी लंबी पूंछ ऊपर कर पूरे गोदाम का एक चक्कर लगाया और घात लगा कर एक चूहे का शिकार भी कर लिया.

मरा हुआ चूहा देख कर सेठ बहुत खुश हुआ. उस ने इनाम के रूप में मिंकी के लिए दूध से भरा कटोरा गोदाम में रखवा दिया.

अब तो मिंकी हर दिन एकदो चूहों को अपना शिकार बनाने लगी. चूहों में खलबली मच गई. उन का बिल से बाहर निकलना मुश्किल हो गया. अनाज न मिलने से वे कमजोर होने लगे. अब कमजोर चूहों का शिकार करने में मिंकी को और भी ज्यादा मजा आने लगा. वह पहले उन्हें डराडरा कर दौड़ाती और जब वे हांफने लगते तो पंजा मार कर उन का शिकार कर लेती.

छिटकू को मिंकी के आने से कोई खास फर्क नहीं पड़ा. वह अब भी पाइप के सहारे चिनिया के कमरे में जाता और टीवी देखता, लेकिन अब उस ने चिनिया की चीजों को नुकसान पहुंचाना बंद कर दिया था.

ऐसे ही एक दिन जब छिटकू खापी कर अपने बिल में आराम करने जा रहा था, तभी उस ने देखा कि भीरु चूहा अपने बिल के सामने पड़ा कराह रहा है, छिटकू दौड़ कर उस की तरफ गया. भीरू के शरीर पर लगे खून के निशान देख कर छिटकू घबरा गया.

''क्या हुआ अंकल? ये चोट कैसे लगी?'' छिटकू ने पूछा तो भीरू ने डरते हुए अपने आसपास देखा, फिर तसल्ली करने के बाद बोला, ''मिंकी.''

''क्या हुआ मिंकी मौसी को?'' छिटकू ने मासूमियत से पूछा.

''अरे, उसे क्या होगा. उस ने मेरा यह हाल बना दिया है. बड़ी मुश्किल से मैं ने जान बचाई है,'' भीरू मिंकी पर नाराज होते हुए बोला.

''मेरे दादाजी बताते थे कि एक बार उन सब ने बिल्ली मौसी के गले में घंटी बांधने की सोची थी. क्यों न हम भी मिंकी मौसी के गले में घंटी बांध दें, जिस से हमें उन के आने का पता चल सके,'' छिटकू ने अपनी राय दी तो भीरू हंसने लगा.

''क्या तुम्हारे दादाजी ने यह नहीं बताया कि जब उन्होंने ऐसा करने के बारे में सोचा तो उस के बाद आगे क्या हुआ?'' भीरू ने पूछा.

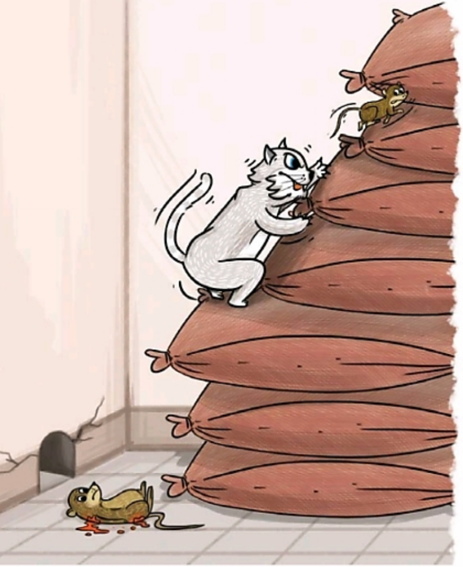

‘‘नहीं,’’ कह कर छिटकू ने अपने कंधे उचका दिए.

‘‘अरे, आगे यह हुआ कि बिल्ली की म्याऊं सुनते ही सब चूहे दुम दबा कर भाग निकले,’’ भीरू ने हंसते हुए कहा.

‘‘अगर मैं ऐसा कुछ कर दूं तो?’’ छिटकू बोला. भीरू उसे हैरान हो कर देखने लगा.

‘‘अगर तुम ऐसा कुछ कर दो तो हम तुम्हें अपने दल का नेता बना देंगे,’’ भीरु ने उसे जोश दिलाया.

अगले दिन छिटकू मिंकी के पास गया. वह गेहूं की बोरी के पीछे पसरी आराम कर रही थी. छिटकू उस से सुरक्षित दूरी बना कर खड़ा हो गया. मिंकी ने अपनी नींद से भरी एक आंख को जरा सा खोल कर मिचमिचाया. उस ने छिटकू को घूर कर देखा और कहा, ‘‘चल भाग यहां से,’’ इतना कह कर उस ने अपनी आंख फिर बंद कर ली.

छिटकू भागा नहीं, बल्कि मिंकी के और नजदीक चला गया.

‘‘मौसी, आप को पता है कि आप की चाल कितनी मतवाली और शानदार है. मैं ने टीवी पर देखा है, इंसान इस तरह की सुंदर चाल को कैटवाक कहते हैं,’’ छिटकू ने कहा तो मिंकी ने अपने कान खड़े किए.

‘‘मैं सच कह रहा हूं मौसी, आप खुद टीवी पर देखें. लड़कियां आप की तरह मटकमटक कर चलती हैं,’’ छिटकू ने मिंकी के और पास आ कर कहा तो मिंकी उठ कर बैठ गई. छिटकू डर कर दूर उछल गया.

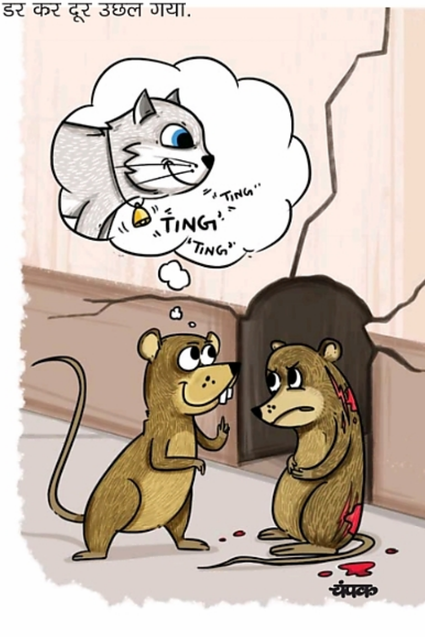

''क्या तुम सही कह रहे हो?'' मिंकी ने पूछा.

''एकदम सही मौसी, लेकिन बस थोड़ी सी कमी है. टीवी वाली लड़कियों के पांवों में पायल होती हैं. जब वे आप की तरह चलती हैं तो उन की पायल के घुंघरू बजते हैं. लेकिन आप के पास पायल नहीं हैं,'' छिटकू ने पूंछ हिलाते हुए कहा. उस की बात सुन कर मिंकी उदास हो गई.

''अगर आप चाहो तो मैं आप के लिए घुंघरू वाली पायल ला सकता हूं,'' छिटकू के इतना कहते ही मिंकी उछल कर खड़ी हो गई. छिटकू एक बार फिर डर गया. इस बार वह दौड़ कर आधा बिल में घुस गया.

''अरे, डरो मत. अगर तुम सचमुच मेरे लिए पायल ला सकते हो तो मैं वादा करती हूं कि तुम्हें कभी कोई नुकसान नहीं पहुंचाऊंगी,'' मिंकी ने उसे भरोसा दिलाया.

अगले दिन छिटकू चिनिया के कमरे में गया और उस की घुंघरू वाली पायल उठा लाया और पायल उस ने मिंकी को दे दी, जिसे मिंकी ने बड़े शौक से अपने पांवों में बांध लिया और मटकमटक कर चलने लगी. इस के साथ ही घुंघरू की आवाज आने लगी. यह देख कर छिटकू ताली बजाने लगा.

''मैं कैसी लग रही हूं?'' मिंकी ने अपनी पूंछ ऊपर उठाई और गोदाम में आगेपीछे दौड़ने लगी.

''वाह मौसी, आप की चाल तो टीवी वाली लड़कियों से भी अच्छी लग रही है. बस, अपने पांवों से ये पायल कभी उतारना मत,'' छिटकू ने कहा तो मिंकी खुशीखुशी घुंघरू बजाती हुई चली गई.

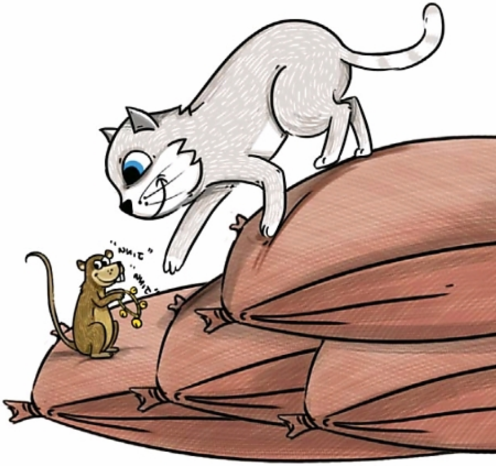

छिटकू भीरू के पास गया और उस ने ये बातें उसे बताईं. भीरू ने यह खुशखबरी जब चूहों को सुनाई तो सब ने अपनेअपने बिलों में से झांक कर मिंकी को पायल पहने गोदाम में घूमते हुए देखा. छिटकू ने जो कहा था वह कर दिखाया. चूहों ने उस की चतुराई देखते हुए उसे अपना नेता चुन लिया.

आजकल मिंकी अपनी पायल के घुंघरू बजाती हुई मटकमटक कर इधरउधर घूमती है, लेकिन एक बात उस की समझ में नहीं आ रही थी कि अचानक सारे चूहे कहां गए?

एक दिन उस ने छिटकू को बुलाया और पूछा, ''क्यों रे छिटकू? आजकल तुम्हारे दोस्त नजर नहीं आते?''

''अरे मौसी, आप से डर कर सब गोदाम

छोड़ कर भाग गए हैं. मुझ से तो आप ने वादा किया है न कि मुझे नहीं मारोगी, इसलिए मैं यहीं रह गया,'' छिटकू ने बताया तो मिंकी का सीना फूल कर चौड़ा हो गया. वह अपनी पूंछ शान ने उठा कर और भी जोर से धमकधमक कर चलने लगी, जितनी जोर से वह चलती, उतने ही तेज उस के घुंघरू बजते और उतनी ही जल्दी सारे चूहे अपने बिल में छिप जाते.

केवल छिटकू मजे से घूमता. कभी गोदाम में तो कभी पाइप के सहारे ऊपर चिनिया के कमरे में.

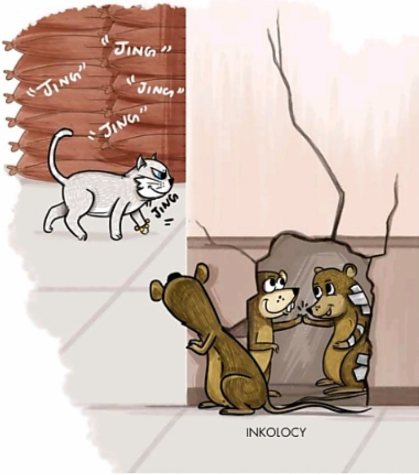

उत्तर पृष्ठ :

पृष्ठ 11 : इन में सामान्य क्या है :		
लड्डुओं की प्लेट, एक गिफ्ट बौक्स 2 राखियां	लड्डुओं की प्लेट, जलेबी की प्लेट	लड्डुओं की प्लेट, 5 फूल, 4 दीये
एक गिफ्ट बौक्स, हाथ का बना कार्ड	जलेबी की प्लेट, 2 राखियां, 5 फूल, हाथ बना कार्ड	हाथ का बना कार्ड, 4 दीये
एक गिफ्ट बौक्स, 5 फूल, कुमकुम पाउडर	जलेबी की प्लेट, कुमकुम पाउडर	2 राखियां, कुमकुम पाउडर, 3 दीये

पृष्ठ 14 : रास्ता बताओ :

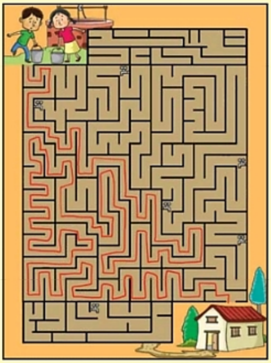

पृष्ठ 27 : हमारे राष्ट्र निर्माता :

इंदिरा गांधी - खाद्य उत्पादन में भारत को आत्मनिर्भर बनाया.

राजीव गांधी - संपूर्ण भारत में संचार व्यवस्था नैटवर्क ने क्रांति ला दी.

अटल बिहारी बाजपेयी - 4 शहरों, मुंबई, दिल्ली, चैन्नई और कोलकाता को जोड़ने के लिए स्वर्ण चतुर्भज प्रोजैक्ट की शुरुआत की.

डा. मनमोहन सिंह - इन के नेतृत्व में शिक्षा का अधिकार अधिनियम अस्तित्व में आया.

नरेंद्र मोदी - स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत की.

WE SPEAK IN 30 DIFFERENT CONSUMER VOICES.

BECAUSE EVERY BRAND IS UNIQUE.

With virtually every age group, income segment and language covering 30 million Indians, we are the most diverse magazine group in India. So next time you want to address anyone in India, you are better off speaking to the **Delhi Press** Group today.

DELHI PRESS

To subscribe to our magazines Call/SMS/WhatsApp: 08588843408,
E-mail: subscription@delhipress.in, You can also subscribe online at www.delhipress.in/subscribe

THE CARAVAN CHAMPAK सरिता गृहशोभा चंपक मुक्ता सरस सलिल फार्म फूड सत्यकथा मनोहर कहानियां
ગૃહશોભા ચંપક સરસ સલિલ गृहशोभिका চম্পক सरस सलिल গৃহশোভা க்ருஹஷோபா சம்பக் சரஸ் சலில் గృహశోభ ಚಂಪಕ
ಗೃಹಶೋಭಾ ഗൃഹശോഭ చంపక్ સલિલ ചംപക് Highlights CHAMPS Highlights Genies MOTORING

(REGISTERED) RNI 16420/68 DL(C)-14/1093/2021-23 WPP U(C)148/40/2021-23 P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 16 to 22 Published on 12/08/2021. Pgs. 52.

STOMAFIT®

लिक्विड व टैबलेट

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

सुनो जी, रक्षा बंधन पर दीदी के घर गये थे कैसा रहा कुछ तो बताइये, ऐसे खड़े-खड़े न मुस्कुराइये।
पेटू जी और रक्षाबंधन
दीदी के यहाँ हो आए हैं, स्टोमाफिट भी दे आए हैं। उनको दिया है वचन, जीवन भर उनकी रक्षा करेंगे हम और पेट की समस्याओं के लिए स्टोमाफिट है उनके संग।

New Pack
अपच व ऐसीडिटी से तुरंत आराम
ANTACID LIQUID WITH BISMUTH & BELLADONNA
STOMAFIT
LIQUID
KEEPS STOMACH FIT
STOMAFIT
CHEWABLE

450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

भाई का तोहफा है, प्यार की निशानी।
हर रोज लिखते हैं, एक नई कहानी।।
उछलते हैं, कूदते है, पढते हैं, लिखते हैं।
रोक न पाया इन्हें बारिश का भी पानी।।
हेमोकॉल है सही पोषण की निशानी।
बस यही बात थी हमें आपको बतानी।।

New Pack
SUNCARE
HAEMOCAL
Iron Tonic with Folic Acid

शहद सा गाढ़ा
संतरे सा स्वाष्टि

300ML, 450ML

HAEMOCAL-Z जिंक के साथ उपलब्ध(450ml)

भूख न लगना, साधारण कमजोरी, बवासीर से एनीमिया, बच्चों में कमजोरी व थकावट, गर्भावस्था में खून की कमी, मासिक धर्म तथा कोविड-19 से आई कमजोरी को दूर करने में सहायक

हेमोकॉल खरीदने के लिए स्कैन करें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.
फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:info@stomafit.com
सभी प्रमुख ऑनलाईन फार्मेसीयों पर उपलब्ध

स्टोमाफिट खरीदने के लिए स्कैन करें